BEST BUDDY

Hindi Edition

By

Manu Kaplis

Jaani Dost

By Manu Kaplis

This book is dedicated to all my loved ones...........without them............I am nothing.

ये कहानी है दोस्ती की !

दोस्ती क्या है? दोस्ती मतलब एक ऐसा रिश्ता जिसमे आप अपने दोस्त के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते है....चाहे वो अच्छा हो या बुरा और उससे भी बड़ी बात चाहे साला वो आपका दोस्त आपकी ये help deserve भी करता है या नहीं.....भई जब दोस्ती की है तो मरानी तो पड़ेगी.......!

खैर ये उन दिनों कि बात है जब मैंने अपनी पहली जॉब शुरू की थी! मेरी पहली जॉब एक Multi National Company में थी! मुझे आज भी याद है वो १५ जून का दिन था यानी मेरे ऑफिस का पहला दिन! पहले दिन और पहली नौकरी कि वजह से मैं मन ही मन कुछ घबराया हुआ सा था! मैं ट्रेनिग रूम में बैठा हुआ था जहाँ पर मेरे जैसे कुछ और न्यू जोइनिंग वाले बेठे हुए थे! मैं भी चुपचाप जा कर एक सीट पर बैठ गया! सारे वहां पर चुपचाप बेठे हुए थे जैसे कि किसी के चौथे पर आए हुए हों !

मैं भी चुपचाप बैठा हुआ कभी दरवाज़े की तरफ देखता तो कभी अपनी घड़ी की तरफ, अचानक बाहर का दरवाज़ा जोर से खुला और वहाँ से एक लड़का जो कि २५ या २६ साल का होगा, अंदर आया ! वो देखने में गुजराती सा लग रहा था उसने ढीली सी पैन्ट और ढीली सी ही शर्ट पहनी हुई थी ! उसकी एंट्री ऐसी थी कि वहाँ पर जितने भी लोग बैठे हुए थे जो कि ऐसे लग रहा था किसी के चौथे में आये हुए हों, उन सबकी हँसी निकल गयी मेरे भी चेहरे पर

हल्की से smile आ गई! वो भी आराम से चलता हुआ मेरी सीट के पास आकर बैठ गया, उसने मुझे देख कर smile किया जवाब में मैने भी एक smile पास कर दी !

उस दिन मुझे बिलकुल भी एहसास नहीं था कि जो मेरे पास आ कर बैठा है वो एक दिन मेरी लाइफ का सबसे बड़ा कमीना (दोस्त) साबित होगा ! उसने हेलो कह कर मेरी तरफ हाथ बढ़ाया और बोला -

" मेरा नाम हेमांग है! "

जवाब में मैंने भी हाथ बढ़ाया और कहा -

" विराट, I am विराट शर्मा! "

जवाब में उसने भी अपना पूरा नाम बताया -

" हेमांग भाई अरविन्द भाई जानी "

मैंने उससे पूछा -

" क्या तुम्हारे साथ कोई और भी आ रहा है? "

उसने कहा - " नहीं "

तो मैंने पूछा -

" तो फिर इतने सारे नाम क्या सब तुम्हारे ही है? "

वो हँसते हुए बोला -

" नहीं यार, मेरा नाम तो हेमांग है , असल में हमारे यहाँ अपने पिता का नाम भी साथ में लगाते हैं, अरविन्द भाई मेरे पिताजी का नाम है और जानी हमारा surname है! "

मैंने उससे कहा -

" यार, अगर मैं तुझे सिर्फ जानी कह कर बुलाऊँ तो चलेगा! "

उसने फ़ौरन मुझसे कहा -

" अरे यार चलेगा नहीं दौड़ेगा दोस्त दौड़ेगा ! "

इसके बाद वो मुझे अपने परिवार के बारे में बताने लगा घर में कौन कौन है...वगैरह वगैरह ! इसके जवाब में मैंने भी उसे अपने परिवार के बारे में बताया !

हम आपस में बातें कर रहे थे इतने में बाहर का दरवाज़ा खुला वहाँ से एक अजीब सी दिखने वाली लडकी आई और सबसे बोली -

" हेलो, मेरा नाम गीतिका है और मैं आपकी HR मैनेजर हूँ......... ! आप सबका यहाँ स्वागत है उम्मीद है आप सबको यहाँ काम करने में मज़ा आएगा और आप सब लोग यहाँ एन्जॉय करेंगे.........! आपकी इंडक्शन ट्रेनिंग अभी दो घंटे बाद शुरू होगी इतने टाइम तक आप लोग ब्रेक ले सकते है! "

इतना कह कर वो बाहर चली गयी इससे पहले कि कोई उससे कुछ पूछ पाता वो दरवाज़े को बंद करके बाहर जा चुकी थी! मैंने और जानी ने एक दुसरे को देखा और दोनों एक साथ बोले - "साला ये क्या आइटम था"!

खैर हम दोनों अपनी सीट से उठे और बाहर निकल गये! हमारा ऑफिस पांचवी मंजिल पर था हम लिफ्ट से नीचे आये और ऑफिस कंपाउंड से बाहर आ गये!

मैंने जानी से पूछा -

" कुछ खायेगा या पियेगा ? "

उसने कहा -

" हाँ पियूँगा! "

मैंने कहा -

" आ चल बाहर कोल्ड ड्रिंक पीते है! "

हम दोनों ने कोल्ड ड्रिंक्स लिए और जानी ने साथ में एक सिगरेट भी ले ली उसने मुझसे पूछा - " पिएगा ? "

मैंने कहा -

" नहीं मैं नही पीता, तू पी ! "

और मैं मन ही मन सोच रहा था कि साला मेरे साथ ही ऐसा क्यूँ होता है जो भी दोस्त मिलता है वो सिगरेट पीने वाला ही मिलता है और मुझे हमेशा passive स्मोकर कि तरह उसका साथ देना पड़ता है ! वैसे भी ये तो बस शुरुआत ही थी अभी मुझे अपने इस कमीने (दोस्त) की और बहुत सी बातों और आदतों के बारे में पता लगना बाकी था ! वो कहते हैं न कि "ये तो सिर्फ ट्रेलर था, असली लगनी तो अभी बाकी है" !

खैर ऐसे ही बातों में वो दिन बीत गया और हमे टाइम का पता ही नही चला !

उस ऑफिस में वो मेरा पहला दिन था और जानी मेरा पहला दोस्त!

धीरे धीरे जैसे जैसे टाइम बीतता गया हमारे बीच कि दोस्ती भी बढती गयी ! कभी हम शाम को शौपिंग के लिए निकल जाते कभी ऐसे ही तफरी मारने के लिए ! हम एक दुसरे को इतना ज्यादा समझने लगे कि किसी भी बात पर हममे से कोई कैसे रियेक्ट करेगा ये बात दूसरा बंदा पहले ही समझ जाता था !

ऐसे ही एक दिन हम एक शोरूम में शौपिंग के लिए गए जानी को अपने लिए कुछ कपड़े लेने थे! हम दोनों बाइक से शोरूम पहुंचे! अन्दर जाकर जानी सीधे मुझे जीन्स के काउंटर पर ले गया और वहा पर जीन्स छांटने लगा उसने कम से कम ६ जीन्स उठा ली और ट्रायल रूम में ले कर चला गया! ट्रायल रूम में अन्दर जाते हुए उसने मुझे एक अलग सी smile पास कि और आँख मारते हुए अन्दर चला गया! मुझे उसी समय लगा कि ये साला कुछ पंगा करेगा अंदर जा कर, पर फिर भी मैं बैठा रहा और उसका इंतज़ार करने लगा! जब १५ मिनट के बाद भी वो बाहर नहीं आया तो मैं समझ गया कि अब ये कोई कमीनापन दिखाने वाला है में फटाफट वहाँ से उठा और बाहर निकल कर बाइक के पास उसका इंतज़ार करने लगा!

करीब और १० मिनट के बाद वो बाहर आया वो जोर जोर से बडबडाते हुए आ रहा था -

" यार कैसा शोरूम है एक भी जीन्स ढंग कि नहीं है, चल कहीं और चल के देखते है! "

ये कहते हुए उसके चेहरे पर वही कमीनी वाली smile थी! उसने बाइक स्टार्ट की और मैं पीछे बैठ गया! जब हम थोड़ी दूर आ गये तो मैंने उससे पूछा -

" साले कर आया काम ! "

वो हंस पड़ा ! मैंने फिर कहा -

" ये तो मुझे पता है कि तू कुछ न कुछ करके आया है अब ये तो बता क्या करके आया है? में तो तभी समझ गया था कि तू कुछ गड़बड़ करेगा जब तूने जीन्स try करने में १५ मिनट से उपर टाइम लगा दिया ! इसीलिए तो मैं बाहर आ गया था! "

उसने बाइक साइड में रोकी और बोला -

" रुक तुझे दिखाता हूँ ! "

उसने अपनी ढीली ढाली पैंट नीचे उतारनी शुरू कर दी.....मैंने उससे कहा -

" अबे......ये क्या कर रहा है.....वो भी बीच सड़क पर ! "

जानी बोला -

"रुक तो.....सही यार ! "

जानी ने अपनी पैंट नीचे करके दिखाई तो मैं भी एक बार तो पूरी तरह हिल गया! वो अपनी पैंट के नीचे एक नहीं बल्कि दो-दो जीन्स पहन कर आया हुआ था !

मैंने उससे कहा-

“ अबे साले अगर पकडे जाते तो बहुत बुरी लगती अपनी और जब जीन्स ही पहननी थे तो साले एक ही पहन कर आ जाता, दो जीन्स की क्या ज़रूरत थी? ”

जानी बोला -

“ भाई खाली एक पहन कर कैसे आ जाता, तू अपना भाई नहीं है क्या? तेरे लिए भी तो एक जीन्स लेनी बनती है न! ”

उसके इस जवाब पर साला मुझे समझ ही नहीं आया कि में क्या रिएक्शन दूँ! एक तरफ तो गुस्सा आ रहा था उसकी हरकत पर और दूसरी तरफ ख़ुशी भी हो रही थी! *(आप लोग सोच रहे होंगे कि मैं शायद इस बात पर खुश हूँ कि मेरा दोस्त मेरा कितना ख्याल रखता है! तो ये बात मैं आपको बता दूँ कि मुझे उस कमीने पर अपने से ज्यादा भरोसा था कि वो कभी भी मुझे अकेला नहीं छोड़ेगा!)* बल्कि मैं तो इसलिए खुश हो रहा था कि एक जीन्स फोकट में आ गयी!

ऐसे ही मस्ती और शरारतों के साथ हमारी ज़िन्दगी मजे से चल रही थी! हमारी ज़िन्दगी में एक तीखा यानी शार्प टर्न तब आया जब जानी ने मुझे अपने होमटाउन जाने के बारे में बताया! जानी ने मुझसे कहा -

“ तू भी चल ना यार मेरे साथ ! ”

मैंने कहा -

“ मैं क्या करूंगा यार ! वहाँ पर मैं किसी को जानता भी नहीं ! ”

जानी बोला -

" अरे मैं हूँ न, चिंता किस बात की है? "

मैंने कहा -

" साले यही तो सबसे बड़ी चिंता है ! "

इस बात पर हम दोनों ही हंस पड़े! खैर उसने आखिर में मुझे साथ चलने के लिए राज़ी कर ही लिया! हम दोनों ने उसके होमटाउन जाने क लिए ट्रेन पकड़ी और निकल पड़े! उसके होमटाउन तक हम बिना किसी दिक्कत या परेशानी के पहुँच गए पर शायद ऐसा इसलिए भी हुआ क्यूंकि असली मुश्किलें तो शायद वहाँ शुरू होनी थी!

हमने स्टेशन से टैक्सी पकड़ी और उसके घर पहुंच गए! उसका घर देखने में अच्छा खासा था! उसका घर करीब ५०० गज में बना हुआ अच्छा खासा बंगलो टाइप था! मैंने उससे कहा -

" यार, घर तो मस्त है तेरा ! "

जानी बोला -

" मेरा नहीं यार, अरविन्द भाई का यानी के मेरे बाप का घर है ! "

मैंने कहा -

" अबे बात तो एक ही हुई ना ! "

जानी बोला -

" बात एक नहीं है, अंदर चल सब पता चल जायेगा ! "

हम अंदर गए तो सबसे पहले एक सिंपल सी और घरेलू सी औरत मिली ! मुझे लगा ये जानी की माँ होगी ! मैंने आगे बढ़ कर उसे नमस्ते कहा और उसके पैर चुने लगा! जानी ये देख कर जोर जोर से हंसने लगा और बोला -

" अरे, यार ये मेरी मम्मी नहीं है, हमारे घर में काम करने वाली आनंदी बेन है ! "

मैंने भी अपनी झेंप मिटाते हुए कहा -

" कोई नहीं यार.........उमर में तो बड़ी ही है, नमस्ते करना तो बनता है ! "

जानी बोला -

" साले तू कितना तमीज़ वाला है मुझे पता है, चल छोड़ तुझे अपने मम्मी और पापा से मिलाता हूँ ! "

जानी ने अपनी माँ को आवाज़ लगायी -

" माँ......माँ किधर हो ! "

अंदर से एक सुशील सी दिखने वाली औरत आई और जानी को देख कर ख़ुशी से बोली -

" बेटा......तू कब आया? "

जानी ने आगे बढ़ कर अपनी माँ के पैर छुए और अपनी माँ के गले लग गया! दोनों के चेहरे पर तस्सली के भाव साफ़ देखे जा सकते थे ! जानी मेरी तरफ मुड़ा और बोला -

" वहां खड़े खड़े क्या कर रहा है.......माँ से नहीं मिलेगा ! "

मैंने आगे बढ़ कर उसकी माँ को नमस्ते की और उनके पैर छुए ! जानी की माँ ने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा -

" खुश रहो ! "

उनके आशीर्वाद और स्पर्श में मुझे अपनी माँ की याद आ गयी !

जानी ने अपनी माँ की तरफ देखा और बोला -

" माँ ये मेरा सबसे प्यारा दोस्त विराट है........ये मेरे साथ मेरे ऑफिस में ही काम करता है ! "

उसकी माँ ने हमें बैठने के लिए बोला और कहा -

" तुम लोग बैठो.......मैं कुछ खाने पीने के लिए लाती हूँ ! "

मैंने जानी से कहा -

" अरे यार........तेरे पापा कहीं दिखाई नहीं दे रहे........ कहीं बाहर गए है क्या? "

जानी बोला -

" पता नहीं यार ! "

थोड़ी देर हम ऐसे ही इधर उधर की बातें करते रहे........थोड़ी देर बाद जानी कि माँ चाय और कुछ खाने पीने का सामान ले आई! जानी ने अपनी माँ से कहा -

" माँ, ये अरविन्द भाई जी किधर है.......नज़र नहीं आ रहे? "

उसकी माँ ने कहा -

" तू अभी तक नहीं सुधरा........पापा कहने में तुझे कोई शर्म आती है क्या? "

मैंने जानी कि तरफ देखा तो वो हँसते हुए बोला -

“ हैरान मत हो यार......तू जस्ट अभी आया ही है ना.......मेरे और अरविन्द भाई जी कि कितनी अच्छी बनती है....ये सब तुझे धीरे धीरे पता चल जायेगा ! ”

हमने अपनी अपनी चाय ख़तम की! चाय ख़तम होने के बाद जानी बोला -

“ चल........तुझे तेरा रूम दिखाता हूँ.....तू भी थक गया होगा थोडा आराम कर ले तब तक अरविन्द भाई जी भी आ जायेंगे ! ”

जानी ने मेरा बैग उठाया और उपर सीढ़ियों कि तरफ चल पढ़ा मैं भी उसके पीछे पीछे चल पढ़ा ! जानी ने मेरा सामान एक रूम में रख दिया और मुझसे बोला -

“ ये तेरा रूम है.....तू यहाँ आराम से आराम कर.......शाम को मिलते है ! ”

मैं भी सफ़र की वजह से बहुत थका हुआ महसूस कर रहा था! मैं सीधे जा कर बिस्तर पर लेट गया.....बेहद थके होने की वजेह से मैं कब सो गया मुझे पता ही नहीं चला !

कुछ समय बाद मेरी आँख खुली.......मैंने पास में पड़े अपने मोबाइल को उठा कर उसमे टाइम देखा तो शाम के पांच बज चुके थे ! इसका मतलब था कि मैं अच्छा खासा तीन चार घंटे की नींद पूरी कर चुका था !

मैं अपने रूम से निकल कर नीच आ गया! नीचे आ कर मैंने देखा कि जानी अपनी माँ से बेठ कर बातें कर रहा था! जानी ने मुझे नीचे आते देखा तो बोला -

" आ जा......आ जा.........थकान उतर गयी तेरी या कुछ बाकी है? "

मैंने कहा -

" हाँ यार.......अब तो फ्रेश फील कर रहा हूँ ! "

तभी घर कि डोर बेल बजी ! जानी की माँ दरवाजा खोलने के लिए दरवाजे की तरफ बढ़ी.......तभी दरवाजा बाहर से अपने आप खुला वहां से एक आदमी धोती - कुर्ते में अंदर आया ! उसको देख कर जानी खड़ा हो गया और उसके पैर छूने लगा........मैं समझ गया हो न हो ये जानी के पिताजी है ! जैसे ही जानी ने उस आदमी के पैर छुए......उस आदमी ने जानी से कहा -

" अरे हेमांग.....तू कब आया......क्यों आया....और ये अपने साथ किसको उठा कर ले आया है? "

जानी ने कहा -

" अरविन्द भाई जी.........इतने सवाल एक साथ मत पूछो कि में जवाब ही न दे पाऊँ...........वैसे मैं अपने घर में कभी भी आ सकता हूँ......उसके लिए मुझे

किसी रीज़न की ज़रूरत नहीं है.......और ये मेरा दोस्त विराट.........और आपकी जानकारी के लिए ये भी बता दूँ कि मैं इसे उठा कर नहीं लाया, ये अपने पैरों पर खुद चलकर आया है.......लंगड़ा नहीं है ये ! "

जानी और उसके पिताजी की इतने अच्छी केमिस्ट्री देखने के बाद तो मेरी हिम्मत ही नहीं हुई कि मैं उसके पिताजी के पैर छू पाऊँ !

इतने में जानी की माँ बीच में बोली -

" आप भी क्या करते हो........बेटा इतने दिनों बाद घर आया है और आप शुरू हो गए ! "

जानी बोला -

" माँ रहने दे......ये मेरा और अरविन्द भाई जी कि बीच का मामला है.....तू बीच में मत पढ़ ! "

इसके बाद जानी मेरी तरफ मुड़ा और बोला -

" चल.....तुझे बाहर घुमा के लाता हूँ ! "

मैं भी बिना कुछ कहे उसके पीछे पीछे बाहर की तरफ चल दिया !

जानी और मैं एक सिगरेट की दुकान के बाहर खड़े थे.....और जानी के हाथ में सिगरेट थी ! जानी सिगरेट के कश ऐसे मार रहा था जैसे पुरानी हिंदी फिल्मों में प्राण कश मारा करता था ! मेरे हाथ में कोल्ड ड्रिंक की बोतल थी और मैं एक बार फिर पैसिव स्मोकिंग कर रहा था !

जानी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और बोला -

“ यार.......तुझे पता है.......में तुझे अपने साथ क्यों लाया हूँ ? ”

मैंने कहा -

“ अकेले आने में तुझे डर लग रहा होगा.......इसलिए लाया होगा ! ”

जानी बोला -

“ यार मज़ाक नहीं.......सीरियसली बोल रहा हूँ......! ”

मैंने पहली बार उसे किसी बात पर इतना सीरियस होते हुए देखा !

मैंने कहा -

“ क्या हुआ......कुछ बोल तो सही ! ”

उसने कहा -

“ यार......असल में एक लड़की है......जिसे में बचपन से जानता हूँ और वो मुझे अच्छी लगती है, मैं उससे शादी भी करना चाहता हूँ! ”

मैंने कहा -

“ तो मतलब.......तू कोर्ट मैरिज करेगा और मुझे गवाही के लिए लाया है ! “

जानी बोला -

“ नहीं यार.....अभी तो मैंने उस लड़की को भी नहीं बोला कि मैं उससे शादी करना चाहता हूँ ! ”

मैंने कहा -

" तो फिर........मुझे क्यों बता रहा है......जाकर उस लड़की को बोल.......तूने शादी उससे करनी है.......मुझसे नहीं ! "

जानी ने कहा -

" यार.....सोचा तो कई बार पर हिम्मत ही नहीं हुई ! "

मैंने कहा -

" हद है यार, तू उसे बचपन से जानता है........फिर भी नहीं बोल पाया ! "

जानी बोला -

" उससे क्या होता है.......अरविन्द भाई जी को तो मैं अपने पैदा होने से जानता हूँ.......जब उनसे ठीक से बात नहीं कर पाता तो इसको तो फिर भी पांच साल बाद से ही जानता हूँ ! "

मैंने कहा -

"वाह......यार क्या comparison है - 'बाप का और प्यार का'.....अबे तुझे दोनों में कोई फर्क नज़र नहीं आता ! "

जानी बोला -

" हाँ यार.......फर्क तो है......पर कुछ हद तक सिचुएशन तो एक जैसे ही है.......तू ही कुछ बता न.....उससे शादी के लिए क्या करूँ कि वो शादी के लिए हाँ कर दे ! "

मैंने पूछा -

" उसके घर में कौन कौन है? "

जानी बोला -

" उसके अलावा उसके पापा है ! "

मैंने कहा -

"मतलब अकेली ही है........सारी जायदाद भी तेरी ! "

जानी हंसने लगा -

" नहीं यार......ऐसी बात नहीं है! "

मैंने पूछा -

" अच्छा ये छोड़.....तू ये बता तू उसे कैसे जानता है? "

जानी बोला -

" वो और मैं बचपन से एक ही स्कूल में साथ साथ पढ़े है ! "

मैंने कहा -

" हम्म.....तो तू अपनी माँ से क्यों नही कहता बात करने के लिए! "

जानी बोला -

" मैंने माँ से बोला था........और माँ ने उससे एक बार बातों बातों में उसकी शादी के बारे में बात की थी.....तो उसने माँ से बोला था कि उसकी शादी का फैसला उसके पापा करेंगे ! "

मैंने कहा -

" तो फिर मुश्किल क्या है......तू उसके पिता जी को इम्प्रेस कर......उनसे बात कर......इसमें प्रॉब्लम क्या है? "

जानी बोला -

" प्रॉब्लम तो कुछ नहीं.....बस दो छोटे से एक्सीडेंट हो गए थे मेरे और उसके बाप के बीच !"

मैंने कहा -

"अबे......तूने कहाँ ठोक दिया था उसके बाप को ! "

जानी बोला -

"अरे यार.......ठोकने वाला एक्सीडेंट होता तो एक बार फिर भी झेल लेता........पर ये बहुत बड़ा पंगा हो गया था ! "

मैंने कहा -

" भाई......ऐसा भी क्या हो गया था? "

जानी बोला -

" एक तो उसके बाप को मेरी शक्ल वैसे ही पसंद नहीं है.........दूसरा वो मुझे आवारा और निकम्मा समझता है! "

मैंने कहा -

"यार.........ये तो वो बेचारा ठीक ही समझता है! "

जानी बोला -

" मजे मत ले.........पूरी बात सुन.....असल में उसके बाप को सिगरेट से सख्त नफरत है और जहाँ मैं पहले छुप छुप कर सिगरेट पीता था वहां पर उसने मुझे कई बार देख लिया था! "

मैंने कहा - " फिर....! "

जानी आगे बोला -

" और सुन.... एक बार होली पर मैंने अपने दोस्तों के साथ कुछ ज्यादा ही भांग पी ली ......जिससे मुझे भांग का नशा पूरी तरह चढ़ गया ! उसके बाद मेरे कमीने दोस्तों ने मेरे सारे कपडे उतार दिये..... मैं सिर्फ कच्छे में सड़कों पर हँसता हुआ भांग के नशे में घूमता रहा ! "

मैंने कहा -

" ये तो तेरी पुरानी आदत है....पर इससे उसके बाप का क्या लेना देना? "

जानी बोला -

" पहले मैं भी यही सोचता था......पर अगले दिन मेरे दोस्तों ने बताया कि मैं उसके घर पर उसी हालत में चला गया था........वहां जा कर मैंने उसके बाप को बाहर बुलाया और अपनी साइकिल पर पीछे बैठने को कहा......और साथ ही साथ में ये गाना भी गाता जा रहा था.......

आजा मेरी गाड़ी में बैठ जा, लॉन्ग ड्राइव जायेंगे.......फुल स्पीड जायेंगे...कहीं रुकेंगे न हम....खाना पीना....गाना बजाना....गाडी में होगा सनम ! "

मैं हँसते हँसते अपना पेट पकड़ कर नीचे बैठ गया !

मैंने कहा -

" वाह मेरे चीते वाह..... लोग तो अपने पैर कुल्हाड़ी पर मारते है........तूने तो अपने पैर राजधानी एक्सप्रेस के नीचे दे दिया ! "

जानी बोला -

" तभी तो तुझे लाया हूँ.....कुछ हेल्प कर न मेरी ! "

मैंने कहा -

" चल भाई.......कुछ न कुछ तो सोचना पड़ेगा....दोस्ती की है.....मरानी तो पड़ेगी ! "

जानी और मैं उसके घर बैठे हुए थे! मैं टीवी पर क्रिकेट मैच देख रहा था.........जानी बेचैनी में इधर उधर घूम रहा था ! वो अचानक से टीवी और मेरे बीच में आ गया और बोला -

" अरे यार.......टीवी ही देखता रहेगा या कुछ आगे भी सोचेगा ! "

मैंने कहा -

" रिलैक्स यार.........टेंशन मत ले....सोच रहा हूँ...! "

जानी बोला -

" साले.....ये कैसा सोच रहा है तू.....तू तो टीवी पर मैच देख रहा है ! "

मैंने कहा -

" अबे तो ये कहाँ लिखा है......कि इधर-उधर घूमते हुए या मुहँ पर ऊँगली रख कर ही सोचा जाता है.....सोचने का काम दिमाग से होता है नाकि आँखों से ! अब जरा टीवी के आगे से हट जा और शान्ति से मैच देखने दे ! "

जानी बोला -

" तुझे मैच की पड़ी है.....और यहाँ मेरे जीवन की शान्ति की लगी हुई है ! "

इतना कह कर जानी ने टीवी बंद कर दिया! कसम से उस टाइम तो ये फीलिंग आये कि में क्रिस गेल होता और जानी क्रिकेट की बॉल ....धो-धो कर मारता उसे !

मैंने अपने गुस्से को काबू करते हुए उससे कहा -

" बोल, आखिर तू क्या चाहता है? "

जानी बोला -

" अरे यार......चाहना क्या है.......तुझे बताया तो था कि मैं उससे शादी करना चाहता हूँ ! "

मैंने कहा -

" अबे ये तब से तू उसे..उसे कर रहा है........उसका कोई नाम भी है या उसके माँ बाप को लगा कि उसके उपर कोई नाम ही सूट नहीं करेगा ! "

जानी बोला-

" नहीं यार........ऐसा कुछ नहीं है......उसका प्यारा सा नाम है......'नीतू.....नीतू चौधरी ! "

ये नाम लेते ही जानी का मुहँ शर्म से लाल हो गया! मैंने कहा -

" हम्म...."

जानी बोला -

" हम्म क्या? "

मैंने कहा -

" मतलब.........तू गुजराती और वो हरियाणा की है.....राईट? "

जानी बोला -

" हाँ लेकिन ऐसा कोई फ़िल्मी पंगा नहीं है....कि मैं गुजराती और वो हरियाणा की तो इस वजह से नीतू के घरवालों को ऑब्जेक्शन हो ! "

मैंने कहा -

" तो फिर......प्रॉब्लम कहाँ है? "

जानी बोला -

" अरे यार.......तुझे बताया तो था......उसके बाप और मेरी अंडरस्टैंडिंग कितनी जबरदस्त है........उसके बाद भी तू यही सोचता है कि वो मुझे अपने बेटी से शादी करने देगा ! "

मैंने कहा -

" वैसे उसे......मेरा मतलब नीतू को पता है कि तू उससे शादी करना चाहता है.....वो क्या सोचती है इस बारे में ! "

जानी बोला -

" नहीं यार....... मैं तो उसे ये तक नहीं बोल पाया हूँ कि मैं उसे बहुत पसंद करता हूँ ! "

मैंने कहा -

" शाबाश मेरे चीते......तू तो सच में बहुत ग्रेट है ! "

जानी बोला -

" हाँ.......वो मुझे पता है........तू ये बता कि अब हमें क्या करना चाहिए? "

मैंने कहा -

" कुछ नहीं.....पहले तो ये पता करना होगा कि नीतू क्या सोचती है......कहीं वो भी तो अपने बाप कि तरह तुझे ज़रूरत से ज्यादा समझदार तो नहीं समझती ! "

जानी बोला -

" हम्म......पर ये पता कैसे चलेगा? "

मैंने कहा -

" अबे.........इसमें पता क्या करना है......सीधे-सीधे बात कर उससे! "

जानी बोला -

" साले........ये सब इतना आसान होता तो में तुझे इतनी दूर लेकर ही क्यों आता? "

मैंने कहा -

" ठीक है...........तू उससे बात तो कर और मिलने का टाइम ले........मुझे उससे मिलवा.....फिर देखते है कि आगे क्या कर सकते है? "

जानी बोला -

" हाँ........इतना तो मैं कर सकता हूँ ! "

मैंने कहा -

" ठीक है........इस सन्डे का फिक्स कर ले ! "

जानी बोला -

" ओके ! "

मैंने कहा -

" अब ज़रा साइड हो जा......और टीवी ऑन कर दे मुझे मैच देखना है ! "

जानी ने मुझे घूरते हुए टीवी चला दिया और मैं जानी को इग्नोर करके मैच देखने लगा !

सुबह के आठ बज चुके थे......आज जानी मुझे पहली बार कुछ नर्वस सा लग रहा था........क्योंकि आज सन्डे का दिन था और हमें आज नीतू से मिलने जाना था !

मैं तैयार हो रहा था......इतने में जानी मेरे पास आया और बोला -

" यार......में सही तो लग रहा हूँ न? "

मैंने जानी की तरफ देखा.........उसने इस गर्मी में भी सूट पहन रखा था और वो भी टाई के साथ !

मैंने कहा -

" अबे तुझे क्या हो गया.....क्या तू वही जानी है जो मेरे साथ हर टाइम बिंदास और बेफिक्र हो कर घूमता था ! "

जानी बोला -

" हाँ यार..........में वही हूँ.......तू मुझे बस ये बता कि में ठीक तो लग रहा हूँ न? "

मैंने कहा -

" अबे तू अपनी गर्लफ्रेंड से मिलने जा रहा है या कहीं इंटरव्यू देने जा रहा है........जो ये सूट पहन कर आ गया ! "

जानी बोला -

" क्यूँ भाई........इसमें क्या खराबी है? "

मैंने कहा -

" कोई खराबी नहीं है.......जा जाकर कुछ कैज़ुअल पहन ले जैसे जीन्स और टी-शर्ट वगेरह ! हम तेरी गर्लफ्रेंड से मिलने जा रहे है नाकि नौकरी मांगने ! "

पहले तो जानी अपनी जिद पर अड़ा रहा कि वो इतने दिनों बाद नीतू से मिलने जा रहा है तो ऐसे ही जाएगा.......कैजुअल्स में नहीं !

जानी ने कहा -

" यार........मैं इतने दिनों बाद नीतू से मिलने जा रहा हूँ.......तो मेरा इम्प्रैशन खराब नहीं पड़ना चाहिए न ! "

मैंने कहा -

" भाई गर्मी का मौसम है........सूट रहने दे........और वैसे भी तू अपनी गर्लफ्रेंड से मिलने जा रहा है.......तो थोडा रिलैक्स मूड में जा.......वैसे तेरा इम्प्रैशन कैसा भी पड़े पर अगर तू ये सूट पहन कर गया तो.........तेरा इम्प्रैशन ज़रूर खराब ही पड़ेगा ! "

खैर......बड़ी देर समझाने पर जानी कपड़े बदलने को तैयार हुआ और हम वहां के लिए निकल पड़े जहाँ हमें नीतू से मिलना था !

जानी और मैं टेबल पर बैठे थे..........नीतू के इंतज़ार में हम दोनों ही चार बार कोल्ड ड्रिंक पी चुके थे !

मैंने जानी से कहा -

" अबे तूने......ठीक से बोला भी था.......वो आएगी भी या नहीं ! "

जानी बोला -

" यार......बोला तो मैंने ठीक से ही था.......उसने बोला भी था कि वो ज़रूर आएगी ! "

तभी रेस्टोरेंट के दरवाज़े पर मुझे एक लड़की दिखी.......उसने ब्लू जीन्स और वाइट शर्ट पहनी हुई थी! लड़की देखने में पतली और स्मार्ट लग रही थी !

मैंने जानी से कहा -

" देख.......शायद तेरी नीतू आ गई ! "

जानी ने दरवाज़े की तरफ देखा और बोला -

" हाँ यार.........यही है वो ! "

मैंने सोचा क्या ये जानी को हाँ कहेगी या नहीं.......क्योंकि देखने में वो जानी से कहीं ज्यादा स्मार्ट थी ! वैसे जानी भी देखने में बुरा नहीं था और अगर कोई उसे अच्छी तरह से समझ ले तो उसे पसंद न करने कि कोई वजह भी नहीं थी !

खैर नीतू हमारे टेबल तक पहुँच चुकी थी ! जानी ने खड़े हो कर उसे हेलो कहा और बोला -

" हाय नीतू..........कैसी हो? "

नीतू ने कहा -

" हाय....आई ऍम फाइन......तुम बताओ ! "

जानी ने कहा -

" मैं भी बिलकुल ठीक हूँ ! "

जानी मेरी तरफ इशारा करते हुए बोला -

" ये मेरा फ्रेंड विराट है.........मेरे साथ दिल्ली में जॉब करता है.........यहाँ कुछ दिनों के लिए घुमने आया है ! "

नीतू ने मेरी तरफ देखा और बोली -

" हेलो.......आपसे मिलकर अच्छा लगा ! "

मैंने भी उसे हेलो किया और कहा -

" सेम हेयर.........! "

जानी मुझे ज़रूरत से ज्यादा नर्वस लग रहा था.........वो खाली गिलास को बार-बार अपने मुहँ से लगा था जैसे कि वो कोल्ड ड्रिंक पी रहा हो !

मैंने जानी से कहा -

" भाई.......क्या कर रहा है......गिलास खाली है ! "

जानी ने सकपका कर गिलास की तरफ देखा और चुपचाप गिलास टेबल पर रख दिया ! ये सब देखकर नीतू के चेहरे पर भी हलकी सी स्माइल आ गयी ! हमने तीनो के लिए और कोल्ड ड्रिंक मंगाए और तीनो अपनी अपनी कोल्ड ड्रिंक पीने लगे! मैं वेट कर रहा था कि जानी कुछ बोलेगा पर वो चुपचाप नीतू की तरफ ही देखता रहा और शायद इसी वजह से नीतू भी कुछ अलग सा महसूस कर रही थी !

आखिर में मुझे ही बात शुरू करनी पड़ी ! मैंने नीतू से कहा -

" जानी कह रहा था.........मेरा मतलब हेमांग बता रहा था कि आप दोनों एक दूसरे को बचपन से जानते हो ! "

नीतू ने कहा -

" हाँ.......हमने शुरू से मेरा मतलब प्ले स्कूल से लेकर कॉलेज तक एक साथ ही पढाई की है ! "

ये सुनकर मुझे विश्वास नहीं हुआ कि........साला ये वही जानी है जिसने इतने बड़े-बड़े कमीनेपन वाले काम किये है और वो उस लड़की से अपनी बात नहीं कह पाया जिसके साथ वो बचपन से पढ़ा है !

मैंने कहा -

" गुड.....वैसे आप जानी के बारे में क्या सोचती है? "

मेरा ये सवाल सुनकर वो एकदम सकपका गयी........शायद उसे अंदाज़ा नहीं था कि मैं ऐसा कुछ पूछूँगा! उसके ऐसे एक्सप्रेशन देख कर मुझे भी एक बार तो लगा कि यार मैंने कुछ गलत तो नहीं कह दिया !

नीतू ने कहा -

" आप किस पॉइंट ऑफ़ व्यू से पूछ रहे है ? "

मैंने कहा -

"मतलब.........एक इंसान के तौर पर.......एक दोस्त के रूप में जानी आपको कैसा लगता है? "

नीतू ने कहा -

" हेमांग एक अच्छा इंसान है.........में उसे बचपन से जानती हूँ और एक दोस्त के रूप में तो मैं उस पर पूरा भरोसा करती हूँ ! "

मैंने कहा

" गुड.......तो फिर प्रॉब्लम क्या है? "

नीतू ने उझे हैरानी से दखा और कहा -

" मतलब ! "

मैंने जानी कि तरफ देखा वो पीछे से हाथ के इशारों से मुझे मना कर रहा था.........और साथ ही साथ मुक्का भी दिखा रहा था ! मैंने नीतू से कहा -

" जानी.........आप से कुछ कहना चाहता है ! "

नीतू ने जानी कि तरफ देखा तो जानी एक दम सुन्न सा हो गया ! जानी बोला -

" नहीं.....कुछ नहीं......ये तो बस ऐसे ही कुछ भी बोलता रहता है ! "

मैंने कहा -

" अरे यार.........बोल न अब मौका है, तो बोल नहीं रहा........जिस काम के लिए तू मुझे इतनी दूर से ले कर आया है.......अब वो काम हो रहा है........तो तू बोल नहीं रहा ! "

जानी ने मेरा हाथ पकड़ा और कहीं कर मुझे एक कोने में ले गया और कहा -

" साले...........क्या कर रहा है..........मरवाएगा मुझे ! "

मैंने कहा -

" वही कर रहा हूँ.........यार जो तुझे बहुत पहले कर देना चाहिए था ! "

मैंने आगे कहा -

" परेशान मत हो यार, आज तेरी प्रॉब्लम सोल्व करके ही जाऊंगा........तू यहीं रुक मैं नीतू से बात करके आता हूँ ! "

जानी बोला -

" देख यार........कुछ उल्टा-सीधा मत करियो ! "

मैंने कहा -

" चिल मार यार.......जो उल्टा होना था वो तू पहले ही उसके बाप के साथ कर चुका है.........अब मुझे कुछ सीधा करने का मौका तो दे ! "

मैं जानी को उधर ही छोड़ कर नीतू के पास गया और कहा -

" सॉरी.........आपको इस तरह वेट करना पड़ा ! "

नीतू ने कहा -

" इट्स ओके......मैं हेमांग को जानती हूँ........ये उसकी पुरानी आदत है ! "

मैंने कहा -

" फिर तो शायद आप कुछ और भी जानती होंगी.......मेरा मतलब कुछ ऐसा जो जानी कहना चाहता हो पर न कह पाया हो ! "

नीतू ने कहा -

" आप एक्ज़ेक्ट्ली क्या कहना चाहते है ? "

यह कहते हुए मैं नीतू के चेहरे पर एक अलग सी उत्तेजना साफ़ देख सकता था !

मैंने कहा -

" असल में.....*(यह कहते हुए मैंने जानी कि तरफ देखा.........वो अपना सर पकड़ कर बैठा था)* जानी ने मुझे बताया कि वो तुम्हे बचपन से ही बहुत पसंद करता है और इतना पसंद करता है कि वो तुमसे शादी करना चाहता है ! "

ये सब मैं एक ही सांस में कह गया ! मैंने नीतू को ये सब कह तो दिया पर उसके बाद मेरी भी धडकने एक दम से तेज हो गयी.........और ऐसा होना नेचुरल भी था क्योंकि आप किसी लड़की से पहली बार मिल रहे हो और सीधा उससे शादी की बात कर दो तो दिल की धडकने तो तेज होंगी ही......भले ही मैं अपनी नहीं अपने दोस्त कि शादी की बात कर रहा हूँ !

मेरी बात सुनकर नीतू एक दम चुप सी हो गयी !

नीतू ने कहा -

" एक्सक्यूज़ मी........मैं अभी आती हूँ ! "

ये कह कर वो वाशरूम की तरफ चली गयी ! उसके जाते ही जानी मेरे पास भागा-भागा आया और बोला -

" अबे.........तूने ऐसा क्या कह दिया कि.......उसका प्रेशर इतना बढ़ गया कि उसे वाशरूम जाना पढ़ गया ! "

मैंने कहा -

" कुछ नहीं......जिस बात के लिए तू इतने दिनों से परेशान था.......वो मैंने उससे ही पूछ ली ! "

जानी बोला -

" क्या......? "

मैंने कहा -

" मैंने नीतू से कहा कि........तू उसे बहुत पसंद करता है और तू उससे शादी करना चाहता है ! "

जानी सर पकड़ कर बैठ गया और बोला -

" साले......मरवा दिया तूने ! "

" अरे यार........किसी को तो पूछना ही था........तूने इतने साल लगा दिए........तुझसे एक बात नहीं हो पायी ! "

जानी बोला -

" और तूने.......साले पहली ही बार में बोल दिया ! "

तभी नीतू वहां आ गयी ! मैं और जानी बिलकुल चुपचाप बैठे थे जैसे कि कोर्ट में जज के सामने मुजरिम होते है !

नीतू ने कहा -

" हेमांग....मुझे तुमसे कुछ कहना है.....मुझे तुमसे एक शिकायत है! "

मैंने और जानी ने एक दुसरे को देखा.........मुझे लगा जानी मरने वाला है और मैंने ये सब नीतू को कह कर कोई बड़ा पंगा कर दिया !

मैंने जानी से कहा -

" तुम दोनों बाते करो.........मैं चलता हूँ ! "

नीतू ने कहा -

" नहीं विराट......तुम यहीं रुको मैं तुम्हारे सामने ही बात करना चाहती हूँ ! "

मुझे लगा आज जानी के साथ-साथ मेरी भी लगने वाली है !

नीतू टेबल पर बैठ गयी और जानी की तरफ देखते हुए बोली -

" मुझे तुमसे यही उम्मीद थी.........मुझे पता था.......तुम कभी भी हिम्मत नहीं कर पाओगे......वो तो अच्छा हुआ तुम विराट को ले आये..........नहीं तो जो बातें विराट ने मुझसे कही......वही सब मैं तुमसे कहना चाहती थी ! "

मैंने और जानी ने एक दुसरे को हैरानी से देखा..........और हम दोनों के ही चेहरे पर स्माइल आ गयी !

मैंने कहा -

" शादी मुबारक हो...! "

नीतू ने कहा -

" थैंक्स.........तुमने मुझे हेमांग की फीलिंग्स के बारे में बता दिया........वरना मुझे पूरी उम्मीद थी कि ये मुझसे कभी भी अपने दिल कि बात नहीं बोलेगा ! "

जानी भी हंसने लगा........उसे तो जैसे विश्वास ही नहीं हो रहा था.......कि इतने सालों से जो वो कहना चाहता था......आज वो सब कह पाया है......ऑफ़ कोर्स......सिर्फ और सिर्फ मेरी वजह से !

मैंने दोनों को देखा........दोनों काफी खुश और रिलैक्स लग रहे थे ! मैं खड़ा हो गया और बोला -

" तुम लोग बातें करो......मैं ज़रा बाहर घूम के आता हूँ ! "

जानी बोला -

" अबे नाटक मत कर.......बाहर का तुझे कुछ पता भी है.......रास्ता वास्ता कुछ पता तो है नहीं.....यहीं बैठ जा......बाद में साथ चलेंगे ! "

मैं कुर्सी पर बैठने लगा.......तभी जानी बोला -

" अबे इतना भी साथ नहीं.........किसी और कुर्सी पर बैठ जा.........हमें कुछ बातें तो करने दे ! "

मैंने जानी की तरफ घूर कर देखा और मन ही मन बोला -

" साला......काम होते ही अपने कमीनेपन पर वापस आ गया ! "

मैं तकरीबन दो घंटे दूसरी तरफ बैठ कर उनका इंतज़ार करता रहा.......करीब दो घंटे बाद जानी और नीतू अपनी अपनी सीट से उठे और उसके बाद हम अपने अपने घर की तरफ चल दिए !

सुबह के आठ बजे थे ! मैं बिस्तर पर बैठा हुआ चाय पी रहा था ! जानी शायद नहाने गया हुआ था! चाय पीते-पीते मैंने अख़बार पढने के लिए उठा लिया.......सोचा देखता हूँ आज कि खास ख़बरें क्या-क्या है ? थोड़ी देर में जानी नहा कर बाहर आया.........मैंने देखा तो वो काफी खुश लग रहा था !

मैंने कहा -

" क्या हुआ.......आज.......खुश तो बहुत लग रहा है तू ! "

जानी बोला -

" हाँ यार.......वो तो है........आज इतने सालों के बाद मैं नीतू से अपनी बात कह पाया हूँ और वो भी सिर्फ तेरी वजह से ! "

मैंने कहा -

" इसके लिए तुझे मेरा अहसानमंद होना चाहिए ! "

जानी बोला -

" साले.........अहसान किस बात......तू दोस्त नहीं है क्या मेरा.........इतना भी नहीं करेगा मेरे लिए ! "

मैंने कहा -

" सही है भाई.......काम भी करवा रहा है तू और धौंस भी जमा रहा है ! "

जानी मेरे पास आ कर बैठ गया और बोला -

" यार.....बाकी सब तो ठीक हो गया.....अब बस एक ही प्रॉब्लम है! "

मैंने कहा -

" अब क्या रह गया यार ? "

जानी बोला -

" नीतू तो मान गयी है......बस अब उसके माँ बाप को राज़ी करना है ! "

मैंने कहा -

" कोई बात नहीं यार........जब नीतू मान गयी है तो उसके माँ बाप भी मान जायेंगे ! तू टेंशन मत ले ! "

जानी बोला -

" भाई मैं टेंशन नहीं लेता......क्योंकि अब तू यहाँ पर है.......तो अब ये तेरी टेंशन है ! "

मैंने जानी की तरफ घूर कर देखा और कहा -

"साले.......तेरा कमीनापन नहीं जाएगा कभी भी ! "

जानी के चेहरे पर एक कमीनी सी स्माइल आ गयी !

मैंने कहा -

" तू नीतू से बात कर........कि हम लोग उसके पापा से मिलना चाहते है ! "

जानी बोला -

" अबे मरवाएगा क्या.......तू जानता नहीं है क्या कि वो मुझे कितना जेंटलमैन टाइप का बंदा समझता है ! "

मैंने कहा -

" जानता हूँ यार.........पर बात करनी ही पढेगी.........बिना बात किये तो हम उसे मना नहीं सकते ! "

जानी ने कहा -

" ठीक है.......मैं नीतू से बोल देता हूँ........पर सब तेरी ज़िम्मेदारी होगी........अगर कोई पंगा हुआ तो तू ही निपटेगा ! "

मैंने कहा -

" ठीक है..........वैसे भी तूने जो करना था......कर चुका........अब सब कुछ मुझ पर छोड़ दे ! "

जानी ने कहा -

" तू नहीं भी बोलता......तब भी मैं सब कुछ तेरे उपर ही छोड़ता ! "

मैंने कहा -

" ठीक है भाई.......ठीक है......तू नीतू को फ़ोन तो कर और उसके बाप से मीटिंग फिक्स कर ! "

जानी ने फट से मेरा मोबाइल उठाया और बोला -

" शुभ काम में देरी कैसी.......अभी करता हूँ ! "

मैंने कहा -

“ अबे कमीने......इस काम के लिए तो अपना फ़ोन यूज़ कर ले ! “

जानी ने फिर वही कमीनी सी स्माइल दे दी ! जानी ने नीतू का नंबर डायल किया और नीतू से बोला -

“ हाय नीतू.........वो........मैंने तुम्हे फ़ोन इसलिए किया........क्योंकि.......विराट को तुमसे कुछ अर्जेंट बात करनी थी ! “

इतना कह कर उसने फ़ोन मेरी तरफ बढ़ा दिया ! मैंने जानी से कहा -

“ हद हो गयी यार.......तू इतना भी नहीं कह सकता.........नीतू से ! “

मैंने फ़ोन लिया और नीतू से कहा -

“ हाय नीतू.........कैसी हो ? “

नीतू ने कहा -

“ आई ऍम फाइन.......तुम बताओ........क्या ज़रूरी बात करनी है ? “

मैंने कहा -

“ कुछ ख़ास नहीं...........बस तुम्हारे पापा से मिलना था.......मुझे और जानी को.........ताकि तुम्हारी और जानी की शादी की बात कर सके ! “

नीतू हैरान हो कर बोली -

“ हेमांग मान गया क्या ? “

मैंने कहा -

" हाँ.......अगर शादी करनी है तो मानना ही पड़ेगा ! "

नीतू बोली -

" ठीक है........आज शाम पापा फ्री है........तुम शाम को चाय पर आ जाना........मैं पापा को बता दूंगी कि तुम लोग उनसे मिलना चाहते हो ! "

मैंने कहा -

" ठीक है.......तो शाम को मिलते है ! "

मैंने जानी कि तरफ देखा........वो कुछ नर्वस सा लग रहा था ! मैंने उससे कहा -

" यार टैंशन मत ले...........और ये नर्वस होना छोड़ दे........आज शाम को तेरे होने वाले ससुर जी से मिलने जाना है.........तैयारी कर ले ! "

जानी एक दम से उछल पड़ा -

" क्या.......आज शाम को ही........इतनी जल्दी ? "

मैंने कहा -

" हाँ आज ही......और ये जल्दी नहीं है..........तू पहले ही बहुत टाइम वेस्ट कर चुका है ! "

जानी बोला -

" पर........."

मैंने कहा -

" पर वर कुछ नहीं.............शाम को तैयार रहियो अपने ससुर से मिलने के लिए.......अब जा और शाम की तैयारी कर ले !

जानी बुझे मन से उठा और कमरे से बाहर निकल गया..........मैंने भी फटाफट चाय ख़तम की और फ्रेश होने चला गया !

शाम के पांच बज रहे थे.........मैं तैयार हो कर नीचे आया.........आते हुए मैं सोच रहा था -

“ यार मिलने के लिए तो बोल दिया........पर मैं नीतू के बाप से बात क्या करूँगा ? “

फिर सोचा कि छोड़ यार टेंशन क्या लेनी जो होगा देखा जाएगा.........मैं कौन सा अपनी शादी की बात करने जा रहा हूँ ! नीचे आकर मैंने देखा जानी के पापा और मम्मी सोफे पर बैठे हुए थे.........और आपस में कुछ बातें कर रहे थे !

मैंने दोनों को नमस्ते की और जानी के पापा से पूछा -

“ अंकल......जानी कहाँ है ? “

उसके पापा बोले -

“ हाँ........बोलो क्या काम है ? “

मैंने कहा -

“ अंकल......एक्चुअली मुझे जानी के साथ कहीं जाना था.........इसलिए जानी को ढूंढ रहा हूँ.........क्या आप जानते है......वो कहाँ है ? “

जानी के पापा बोले -

“ हाँ बिलकुल..........एक जानी तो मैं........जो तुमसे बात कर रहा हूँ और एक जानी यहाँ सोफे पर है......यहाँ तो सब जानी ही है......तुम्हे कौन सा जानी चाहिए ? “

मैंने थोडा झेंपते हुए कहा -

" अंकल......मेरा मतलब हेमांग से था ! "

इतने में जानी कि माँ बीच में बोल पड़ी -

" क्या.......आप भी बच्चों से मज़ाक करते रहते हो..........जब वो हेमांग का दोस्त है तो हेमांग के लिए ही पूछ रहा होगा ! "

जानी के पापा ने कहा -

" लेकिन.........वो सिर्फ जानी के लिए पूछ रहा था ! "

जानी की माँ बोली -

" तुम बैठो बेटा.........हेमांग ज़रा बाहर गया है........बस आता ही होगा ! "

मैंने कहा -

" कोई बात नहीं आंटी........मैं बाहर ही वेट कर लूँगा ! "

इतना कह कर मैं बाहर की और निकल गया !

मैं बाहर जानी की बाइक के पास खड़ा हुआ जानी का इंतज़ार कर रहा था.........थोड़ी देर मैं जानी वहां आ गया !

मैंने उससे कहा -

" अबे........कहाँ चला गया था तू..........नीतू के पापा से मिलने नहीं जाना है क्या ? "

जानी बोला -

" हाँ यार......पता है.......इसीलिए तो कटिंग करवाने गया था........ताकि थोडा सैंसिबल लगूं ! "

मैंने कहा -

" ठीक है........चल अब चलते है.......लेट हो रहा है ! "

जानी ने अपनी बाइक स्टार्ट की और हम दोनों बाइक पर बैठ कर नीतू के घर की तरफ चल दिए ! तक़रीबन पंद्रह मिनट बाद हम नीतू के घर के सामने खड़े थे.........नीतू का घर काफी बड़ा था......उसका घर जानी के घर से भी काफी बड़ा लग रहा था......हम गेट से अंदर गए ! अंदर काफी बड़ा लॉन था.......जानी ने बाइक एक साइड में खड़ी की और वहां से नीतू को फ़ोन करके हमारे आने के बारे में बताया......थोड़ी देर में नीतू भी वहाँ आ गयी !

मैंने नीतू को हेलो किया और पूछा -

" कैसा गार्ड रखा है तुमने......तुम्हारे गार्ड ने हमे अंदर आने से रोका ही नहीं ! "

नीतू ने कहा -

हाँ.....मैंने ही उसे मना किया था........तुम लोगों को रोकने के लिए........आओ अंदर चलते है.......पापा अंदर ही है.......तुम लोगों का वेट कर रहे है ! "

हम दोनों नीतू के पीछे-पीछे अंदर की तरफ चल दिए ! अंदर जा कर मैंने देखा कि नीतू का घर काफी आलिशान तरीके से सजा हुआ था........और अंदर

से भी उतना ही बड़ा और खुबसूरत फील हो रहा था..........जितना कि बाहर से !

नीतू ने हमे सोफे पर बैठने को कहा -

" तुम लोग बैठो.....मैं पापा को बुला कर लाती हूँ ! "

हम चुपचाप शरीफों की तरह सोफे पर बैठ गए........मैंने जानी से कहा -

" यार.......हम आ तो गए है.......पर बात क्या करेंगे ? "

जानी ने मेरी तरफ घूर कर देखा और बोला -

" साले मज़ाक मत कर.........मेरी वैसे ही लगी पड़ी है........और तू कह रहा है कि बात क्या करेंगे......तू मुझे यहाँ ले कर आया है.......अब तू ही बात करेगा......मुझे नहीं पता बस ! "

इतने में नीतू अपने पापा के साथ वहां आ गयी.......नीतू ने अपने पापा से मिलवाया -

" पापा........ये हेमांग है और ये उसका दोस्त विराट ! "

हम दोनों ने ही उसके पापा को खड़े हो कर नमस्ते की........उसके पापा ने हमे इशारे से बैठने के लिए कहा ! नीतू के पापा की हाइट लगभग साढ़े पांच फीट के करीब होगी.........सर बिलकुल खुले मैदान की तरह साफ़ था.......एक भी बाल उनके सर पर नहीं था..........मतलब कि आप कह सकते हो कि कोई उनका बाल भी बांका नहीं कर सकता था ! उनके चेहरे पर एक रौब था.......पर उनके चेहरे को देख कर मुझे रौब और हँसी दोनों फीलिंग्स एक

साथ ही आई.......क्योंकि उनकी मूछें बिलकुल हिटलर स्टाइल की यानी टूथब्रश जैसी मूछें थी ! इससे पहले कि हममें से कोई कुछ बोलता.......नीतू के पापा बोल पड़े -

" कहो.......किसलिए मिलना चाहते थे.......आज अपनी साइकिल नहीं लाये.......मुझे लॉन्ग ड्राइव पर ले जाने के लिए ! "

मेरे चेहरे पर हँसी आते-आते रुक गयी.........मैंने कहा -

" अंकल एक्चुअली........हम उस दिन के लिए ही माफ़ी मांगने आये थे ! उस दिन जानी के दोस्तों ने इसे धोखे से भांग पिला दी थी.........जिस वजह से ये अपने होश में नहीं था "

नीतू के पापा ने कहा -

" जो अपने होश नहीं संभाल सकता..........वो मेरी लड़की को क्या संभालेगा ? "

मैंने और जानी ने नीतू के पापा को हैरानी भरी नज़रों से देखा.......नीतू के पापा ने कहा -

" मुझे नीतू ने सब बता दिया है.........पर जो लड़का अपने आपको नहीं संभल सकता...........वो मेरी लड़की को क्या संभालेगा ? "

मैंने कहा -

" अंकल......आप चिंता मत करिए........कम से कम एक मौका तो दीजिये जानी को.........अपने आपको साबित करने का ! "

नीतू के पापा खामोश रहे........मैंने आगे कहा -

" अगर ये अपने आपको साबित नहीं कर पाया तो.........ये वही करेगा.........जो आप कहेंगे ! "

जानी मुझे घूर कर देखने लगा........मैंने इशारे से उसे चुप रहने को कहा.........नीतू के पापा थोड़ी देर चुप रहे और फिर बोले -

" ठीक है.........मैं एक महीने का टाइम देता हूँ........अगर ये उस टाइम तक मुझे ये साबित करके दिखा दे कि........ये अपना और मेरी नीतू का ख्याल अच्छे से रख सकता है तो मैं इस बारे में सोचूंगा ! "

मैंने कहा -

" ठीक है......"

नीतू के पापा ने कहा -

" तुम्हे तुम्हारी बात याद है न.........कि अगर ये साबित ना कर पाया तो तुम लोग वही करोगे........जो मैं कहूँगा ! "

मैंने कहा -

" जी हाँ.......बिलकुल याद है.......पर......ये सब साबित करने के लिए जानी को करना क्या होगा ? "

नीतू के पापा ने कहा -

" ये सब मैं तुम लोगों पर छोड़ता हूँ कि तुम ये सब कैसे साबित कर सकते हो........मुझे अगर ठीक न लगा तो मैं जो कहूँगा तुम्हें वही करना होगा ! "

मैंने कहा -

" ठीक है अंकल.........अब हम चलते है.......एक महीने बाद आपसे मिलेंगे ! "

इतना कहकर मैं जानी का हाथ पकड़ कर उसे खींच कर बाहर ले आया ! बाहर आने के बाद जानी बोला -

" अबे........तू फ़िल्मी स्टाइल में मुझे बाहर तो ले आया लेकिन हम करेंगे क्या........तुझे मालूम भी है.........वो बुड्ढा कभी भी मानेगा नहीं ! "

मैंने कहा -

" क्यों......ऐसा क्या हो गया जो तुझे ये लगता है कि.......वो नहीं मानेगा ! "

जानी ने कहा -

" तुझे पता है........मैं अपने बाप को अरविन्द भाई जी क्यों बुलाता हूँ ? "

मैंने कहा -

हाँ तूने मुझे व्हाट्सएप तो किया था इस बारे में......... पर मेरा नेट पैक ख़त्म हो गया है न......इसलिए अभी तेरा मेसेज मेरे पास पहुंचा नहीं है ! "

जानी ने कहा -

" मज़ाक मत कर......"

मैंने कहा -

" तो मुझे क्या सपने आ रहें है कि तू अपने बाप को नाम ले कर क्यों बुलाता है ? "

जानी बोला -

" असल में.........जब मेरे मम्मी पापा और नीतू के पापा कॉलेज में पड़ते थे.........तब नीतू का ये खड़ूस बाप मेरी माँ से शादी करना चाहता था.........पर माँ ने मेरे डैड से शादी कर ली ! "

मैंने कहा -

" मतलब.........ये तुम्हारा खानदानी विलेन है........पर इस वजह से तू अपने बाप को नाम ले कर क्यों बुलाता है ? "

जानी बोला -

" यार.........मैंने जब पिताजी को बताया कि........मैं अपनी पसंद से शादी करना चाहता हूँ.........तो वो बहुत खुश हुए पर जब उन्हें पता चला कि नीतू किसकी लड़की है तो..........उन्होंने मुझसे कहा कि.......अगर नीतू से शादी करनी है.........तो मुझे अपना बाप मत समझना........बस तबसे मैं अपने बाप को नाम ले कर बुलाता हूँ ! "

मैंने कहा -

" शाबाश मेरे चीते........मुझे तुझसे यही उम्मीद थी ! "

मैंने जानी से बाइक की चाबी ली और बाइक स्टार्ट करते हुए कहा -

" चल........घर चलते है........फिर सोचते है.......कि क्या करना है ? "

इतने में नीतू भी वहां आ गयी ! नीतू ने कहा -

" विराट.......तुम वो कर लोगे न जो पापा ने तुमसे कहा है ! "

मैंने नीतू के सर पर हाथ रखा और कहा -

" बहन नहीं बोल सकता...........क्योकि तुम मेरे होने वाली भाभी हो........पर ये वादा ज़रूर करता हूँ कि तुम्हारी शादी जानी से ही होगी ! "

मेरी बात सुन कर...........नीतू के चेहरे पर एक हलकी सी स्माइल आ गयी !

मैंने कहा -

" अब हम चलते है........मुझ पर विश्वास रखना........सब ठीक हो जायेगा ! "

इसके बाद हम जानी के घर की तरफ चल पड़े ! जानी बोला -

" साले.........नीतू के सामने तो बड़े स्टाइल में फ़िल्मी बातें मार रहा था......अब करेगा क्या ? "

मैंने कहा -

" यार........ये तो मुझे भी नहीं पाता ! "

जानी बोला -

" तो..........फिर छोड़ क्यों रहा था......लम्बी-लम्बी ! "

मैंने कहा -

" वो.......तो यार मुझे कुछ समझ ही नहीं आया कि क्या बोलूं.......तो उस टाइम जो मन में आया वो बोल दिया ! "

जानी बोला -

" बोल दिया.........तो करना भी ज़रूर पड़ेगा ! "

मैंने कहा -

" तुझे विश्वास नहीं है मुझे पर......! "

जानी ने कहा -

" बिलकुल भी नहीं......! "

मैंने कहा -

" सही है..........तू भी मेरी तरह ही सोचता है.......मुझे भी तुझ पर बिलकुल विश्वास नहीं है.......चल अब टेंशन छोड़ और कुछ खिला पिला दे.........तेरे ससुर ने तो पानी भी नहीं पूछा ! "

जानी हंसने लगा और बोला -

" चल........किसी रेस्टोरेंट पर रोक लियो ! "

थोडा आगे चलने पर मुझे एक रेस्टोरेंट दिखा मैंने बाइक उसके पास रोक दी और हम दोनों रेस्टोरेंट के अंदर चले गए !

जानी और मैं टेबल पर बैठे थे........हमारे सामने कोल्ड काफी रखी हुई थी........हम दोनों ही सोच रहे थे कि आगे क्या किया जाए ? इतने में जानी बोला -

" कॉफ़ी तो पी ले यार........ठंडी हो जाएगी ! "

मैंने कहा -

" अबे.........वो पहले ही ठंडी है.......कोल्ड कॉफ़ी मंगवाई थी हमने.......हॉट कॉफ़ी नहीं ! "

जानी ने कहा -

" अच्छा..............फिर भी तू पी ले...........नहीं तो ये गरम हो जायेगी ! "

मैंने चुपचाप अपनी कॉफ़ी उठाई और पीने लगा !

जानी ने कहा -

" अबे कुछ सोचा भी है........क्या करना है.......या यूँ ही टाइम पास करते रहेंगे ! "

मैंने कहा -

" तू ये बता कि नीतू पर हम कितना भरोसा कर सकते है ? "

जानी ने कहा -

" मतलब.......! "

मैंने कहा -

“ मतलब ये कि..........अगर हम नीतू को कुछ करने को या छुपाने को कहें तो..........क्या वो ये सब अपने बाप से छुपा सकती है ? “

जानी बोला -

“ तेरे दिमाग में चल क्या रहा है..........बता तो सही ! “

मैंने कहा -

“ जो तुझसे पूछा है..........पहले वो बता ! “

जानी बोला -

“ हाँ यार.........इतना तो कर ही देगी वो.........जितना मैं उसे जानता हूँ..........उसे ये सब करने में कोई प्रॉब्लम तो नहीं होनी चाहिए ! “

मैंने कहा -

“ देख यार........चाहिए जैसी कोई चीज़ नहीं चाहिए मुझे...........मुझे कन्फर्म बता........वो कर सकती है या नहीं ! “

जानी बोला -

“ कर देगी........! “

मैंने कहा -

“ पक्का......! “

जानी ने कहा -

“ हाँ यार......पक्का.......पर ये तो बता तेरे कमीने दिमाग में चल क्या रहा है.........? “

मैंने कहा -

“ देख यार..........हम फ़िल्मी स्टाइल मे.........नीतू के बाप के सामने झाड़ तो आये है........अब हमे ये काम भी उसी तरीके से ही करना होगा ! “

जानी की आँखे और खुल गयी.......जानी बोला -

“ मतलब........साफ़ साफ़ बोल न क्या करना है.........टीवी सीरियल की तरह फ़ालतू में बात को लम्बा मत खींच ! “

मैंने कहा -

“ देख.........हम दोनों नीतू के बाप की कंपनी में नौकरी करेंगे और ये नौकरी हमे नीतू दिलवाएगी ! “

जानी एक दम से खड़ा हो गे और बोला -

“ अबे..........पागल हो गया है क्या........वहाँ नौकरी करने से क्या होगा..........और उसका बाप हमें नौकरी पर क्यों रखेगा ? “

मैंने कहा -

“ पहली बात तो ये कि नीतू का बाप हमें नहीं.........बल्कि नीतू के दो दोस्तों ‘हरमन सिंह’ यानी तू और ‘बलवंत सिंह’ यानी मैं......को नौकरी पर रखेगा ! “

जानी बोला -

“ नाम बदलने से क्या हो जायेगा.........वो अँधा थोड़ी है........जो हमें पहचानेगा नहीं ! “

मैंने कहा -

“ कौन कम्बख्त खाली नाम बदल रहा है.....हम तो पूरा हुलिया ही बदलेंगे ! “

जानी बोला -

“ हाँ......फिल्मों की तरह मैं मूछें लगा लूँगा.........तू नकली मस्सा लगा लियो और उसका बाप हमें फिर नहीं पहचानेगा ! “

मैंने कहा -

“ मज़ाक मत कर........! “

जानी बोला -

“ तो शुरू किसने किया था ? “

मैंने कहा -

“ पूरी बात तो सुन........हम ऐसा हुलिया बदलेंगे जिसमें हमें कोई पहचान नहीं पायेगा ! “

जाने ने कहा -

“ क्यों......प्लास्टिक सर्जरी करवाएगा ? “

मैंने कहा -

" नहीं.......वो देख सामने की टेबल पर......हम वैसे जायेंगे ! "

जानी ने सामने की टेबल पर देखा और बोला -

" अबे.........पागल हो गया है तू.........हम ऐसे जायेंगे ! "

मैंने कहा -

" हाँ.......हम ऐसे जायेंगे........मतलब कि हम सरदार जी बन कर जायेंगे.........क्योकि इस हुलिए में हमे कोई पहचान नहीं पायेगा ! "

जानी बोला -

" बलवंत सिंह जी........अगर हम पकडे गए तो बलवंत राय के कुतों की तरह मारे जायेंगे ! "

मैंने कहा -

" रिलैक्स यार.......ऐसा कुछ नहीं होगा..........और वैसे भी हमारे पास और कोई रास्ता नहीं है.......तेरा वो खडूस ससुर किसी भी हालत में हाँ नहीं करने वाला ! "

जानी कुछ देर सोचता रहा फिर बोला -

" अच्छा ठीक है..........हम चले जायेंगे........पर हम वहाँ करेंगे क्या ? "

मैंने कहा -

" देख यार.........ये फ़िल्मी कहानी तो है नहीं कि तू एक महीने में हीरो की तरह करोड़ों कमा लेगा........ये रियल लाइफ है और रियल लाइफ में इतनी जल्दी कुछ करना हो तो.......थोडा कमीनापन तो करना पड़ेगा ! "

जानी बोला -

" तू फिर बातें मारने लगा...........साफ़-साफ़ बोल..........क्या करना है ? "

मैंने कहा -

" देख........जितनी प्रॉपर्टी और इनकम नीतू के बाप के पास है.........उतनी इमानदारी से तो कमाई नहीं जा सकती..........नीतू के बाप का भी कोई न कोई उल्टा काम तो होगा.........हम वहाँ नौकरी करके उसका पता लगायेंगे ! "

जानी ने कहा -

" तो उससे क्या होगा.......?

मैंने कहा -

" अरे यार.........उससे ये होगा जब हमें सब पता चल जाएगा तो हम उसके बाप को ब्लैकमेल करेंगे..........कि वो नीतू की शादी तुझसे कर दे ! "

जानी बोला -

" हाँ-हाँ क्यों नहीं.........उसका बाप तो हमारा ही इंतज़ार कर रहा होगा कि हम आयें तो वो अपने सीक्रेट हमें बताये.........और हम उसे ब्लैकमेल करे ! "

मैंने कहा-

" अबे.........इसीलिए तो उसके यहाँ नौकरी करनी है........ताकि हमें कुछ पता चल सके ! "

जानी ने कहा -

" तू तो पागल हो गया है..........मैं ये सब नहीं करने वाला.......तू मरवाएगा ! "

मैंने कहा -

" ठीक है.........फिर नीतू को भी भूल जा ! "

जानी ने मुझे घूर कर देखा और बोला -

" नीतू को फ़ोन कब करूँ........? "

मैंने कहा -

" अब आया न तू अपने असली औकात पर..........कल का टाइम ले ले उससे मिलने के लिए........और हाँ फ़ोन पर कुछ मत बोलियो उसे..........मैं अपने आप उससे बात कर लूँगा ! "

जानी ने हाँ में सर हिलाया और हम खड़े हो गए...........मैंने बाइक की चाबी ली और जानी से कहा -

" तू बिल देकर आ.........मैं बाहर बाइक के पास तेरा इंतज़ार कर रहा हूँ ! "

जानी ने मुझे गुस्से से देखा और धीरे से बोला -

" कमीना.........साला.......! "

अगले दिन शाम के समय मॉल के अंदर हम एक चबूतरे पर बैठे हुए थे ! हम तीनों यानी कि मैं, जानी और नीतू एक दूसरे की शक्लें देख रहे थे ! नीतू की आँखों में हैरानी और बैचेनी साफ़ नज़र आ रही थी !

नीतू एक दम से चिल्लाई -

" तुम दोनों पागल तो नहीं हो गए........तुम्हें पता भी है कि तुम क्या करने की सोच रहे हो ? "

मैंने कहा -

" हाँ हम जानते है..........हम क्या करने की सोच रहे है.......पर अगर हम ये नहीं करते है.........तो दूसरी कोई रास्ता भी नहीं है........उस हिटलर को पटाने का ! "

नीतू ने मुझे गुस्से से घूरा !

मैंने एक दम सकपकाते हुए कहा -

" सॉरी........पर तुम ही बताओ अगर कोई और रास्ता है.......तो ! "

नीतू ने कहा -

" तुम लोगों को मेरे पापा बहुत जल्दी पहचान जायेंगे..........तुम उनको जानते नहीं हो........इतना बड़ा बिज़नस यूँ ही नहीं संभाल रहे है वो ! "

मैंने कहा -

“ कोई बात नहीं.........तुम उतना तो करो.......जितना हम कह रहे है.........बाकी हमारे उपर छोड़ दो ! “

नीतू थोड़ी देर सोचने के बाद बोली -

“ ठीक है...............मैं बात कर लूंगी.......तुम दोनों कल पापा से उनके ऑफिस में मिल लेना ! “

मैंने कहा -

“ थैंक्स.......तो कल मिलते है......तुम्हारे पापा से ऑफिस में ! “

इसके बाद मैंने नीतू और जानी को आपस में बातें करने के लिए छोड़ दिया........और खुद मॉल घूमने चल पड़ा !

सुबह के आठ बजे थे.......मैं और जानी हरमन सिंह और बलवंत सिंह के रूप में तैयार हो चुके थे ! अभी तक तो हम शीशे में अपने आपको ही देखकर तैयार हो रहे थे........पर जब पूरी तरह तैयार होने के बाद हमने एक दूसरे को देखा...........तो एक बार तो हम दोनों भी एक दुसरे को पहचान नहीं पाए !

मैंने कहा -

" यार.........लगता है.......अपना आईडिया काम कर जायेगा.........क्योंकि जब हम आपस में एक दूसरे को ही पहचान नहीं पाए.......तो कोई और क्या पहचानेगा ! "

जानी ने कहा -

" आईडिया काम कर जाए तो अच्छा है........अगर उसके बाप ने खोजी कुते की तरह हमें सूंघ कर पहचान लिया.........तो अपनी अच्छी खासी लग जाएगी ! "

मैंने कहा -

" अब टैंशन छोड़.......चलते है........नीतू भी हमारा इंतज़ार कर रही होगी ! "

जानी ने कहा -

" मैं नीतू को फ़ोन कर दूँ..........कि हम लोग निकल रहे है ! "

मैंने कहा -

" रहने दे........देखते हैं कि वो हमें पहचान पाती है या नहीं ! "

हम दोनों जानी के घर से निकल कर नीतू के पापा के ऑफिस की तरफ चल दिए.......जहाँ नीतू हमारा इंतज़ार कर रही थी !

ऑफिस पहुंच कर हमने बाइक पार्किंग में लगाई और ऑफिस के अंदर रिसेप्शन की तरफ चल पड़े ! हम रिसेप्शन पर पहुँच कर रिसेप्शनिस्ट से पूछने ही वाले थे कि सामने से नीतू आ गयी.......आते ही उसने कहा -

" आ गए तुम दोनों.........मैं कब से तुम्हारा इंतज़ार कर रही हूँ ! "

मैंने कहा -

" अरे.......हम एक दुसरे को पहचान नहीं पाए.......फिर तुमने हमें कैसे पहचान लिया ? "

नीतू ने जानी का मुहँ पकड़ कर मेरी तरफ घुमाया और बोली -

" ऐसे पहचाना मैंने.....! "

मैंने देखा जानी की आधी मूंछ लटकी हुई थी........मैंने कहा -

" अबे......ये क्या कर रहा है........मरवाएगा तू.......जल्दी से इसे ठीक कर ! "

इतने में नीतू के पापा भी ऑफिस पहुंच गए ! जल्दी-जल्दी में जानी ने अपनी आधी मूंछ उपर की तरफ और आधी मूंछ नीच की तरफ चिपका ली.......वो तो अच्छा हुआ कि नीतू के पापा के देखने से पहले मेरी नज़र चली गयी.......मैं जानी का हाथ खींच कर वॉशरूम की तरफ ले गया !

हम वॉशरूम में पहुंचे ही थे कि नीतू भी वहाँ पीछे-पीछे आ गयी !

मैंने कहा -

" माना.......ये तुम्हारा ऑफिस है..........पर इसका ये मतलब नहीं कि तुम जेन्ट्स टॉयलेट में हमारे पीछे-पीछे आ जाओ ! "

नीतू ने कहा -

" बकवास मत करो.........तुम दोनों यहाँ क्यों आ गए..........मैं अपने पापा से तुम्हे मिलवा ही रही थी..........और तुम बीच में ही भाग आए ! "

मैंने कहा -

" अगर नहीं भागते तो.........आज ही वो हिटलर हमारा काम कर देता..........ये देखो ! "

यह कहकर मैंने जानी का मुहें उसकी तरफ घुमा दिया.........जानी को देखर नीतू की बी हँसी निकल गयी !

नीतू ने कहा -

" हेमांग......ये मूंछों का कौन सा स्टाइल है ? "

जानी ने कहा -

" यार वो जल्दी-जल्दी में लगा ली........आगे से ध्यान रखूँगा ! "

नीतू ने कहा -

" ठीक है........पर ज़रा जल्दी करना...........पापा अपने केबिन में तुम लोगों का इंतज़ार कर रहे है ! "

मैंने कहा -

" हाँ ठीक है...........तुम चलो हम आते है ! "

नीतू के जाने के बाद मैंने जानी से कहा -

" यार........क्या लगता है.........वो हिटलर हमें पहचानेगा तो नहीं......! "

जानी बोला -

" अरे यार...........पहले ही लगी हुई है.........और डरा मत.....! "

मैंने कहा -

" फिर भी.......अगर वो गलती से पहचान गया तो..........? "

जानी बोला -

" तो क्या.........? "

मैंने कहा -

" तो क्या करेगा..........कुछ सोचा है ? "

जानी बोला -

" तो फिर.........मुझे क्या करना है..........जो करेगा........उसका बाप करेगा ! "

मैंने कहा -

" देख..........ऐसी नौबत वैसे तो आएगी नहीं..........अगर आ भी जाए तो............उस हिटलर के पांव पकड़ लियो और उसे कहियो कि.........प्लीज़-

प्लीज़ मैं नीतू के बिना नहीं रह सकता.........हमारी शादी करवा दो प्लीज़..........! “

जानी बोला -

“ मजे मत ले.........तू नहीं जानता यार........मैं कितना नर्वस हो रहा हूँ ! “

मैंने कहा -

“ रिलैक्स यार........कुछ उल्टा-सीधा मत कर दियो अंदर.........अब चल वो हिटलर वेट कर रहा होगा ! “

मैं और जानी अपने अपने हुलिए को ठीक करके नीतू के पापा के केबिन की तरफ चल पड़े ! केबिन के सामने पहुंचने पर हमने देखा कि दरवाज़े पर नीतू के पापा के नाम का बोर्ड लगा हुआ था..........जिस पर लिखा था.......' निरंजन चौधरी ' !

हमने दरवाज़े को खटखटाया और दोनों एक साथ बोले -

“ क्या हम अंदर आ सकते है ? “

नीतू के पापा ने हमारी तरफ देखे बिना कहा -

“ अंदर आ जाओ ! “

हम दोनों यही सोच रहे थे कि..........कहीं ये हमें पहचान न जाए.......हम दोनों केबिन के अंदर पहुंचे.........नीतू भी वहीं अपने पापा के पास खड़ी थी !

नीतू ने कहा -

" पापा.........ये मेरे दोस्त है..........हरमन और बलवंत........जिनके बारे में मैंने आपसे बात की थी......! "

नीतू के पापा ने हमारी तरफ गौर से देखा.........मुझे लगा शायद हिटलर हमें पहचान लेगा.......पर उसने कहा -

" हाँ-हाँ..........नीतू ने बताया था तुम दोनों के बारे में.........आओ बैठो ! "

मै और जानी दोनों अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठ गए..........मैं जानी के चेहरे पर घबराहट साफ देख सकता था..........मैं मन ही मन सोच रहा था कि........ये कोई पंगा न कर दे ! इतने में नीतू के पापा ने जानी से कहा -

" क्या हुआ.........कुछ परेशान और घबराये हुए से लग रहे हो ? "

जानी एक दम से खड़ा हुआ और नीतू के पापा के पैरों में बैठ कर बोला -

" अंकल.......प्लीज......मुझे माफ़ कर दीजिये.........सब इस बलवंत की चाल थी.........प्लीज मेरी शादी करा दो प्लीज.......मना मत करना अंकल प्लीज.......! "

जानी के इस बर्ताव से हम सभी हैरान हो गए थे......मैंने मन ही मन अपने आप से कहा -

" बेटा........अब तो गए......अब पक्का लगेगी हमारी........! "

नीतू के पापा ने बोला -

" अरे-अरे..........तुमे ये क्या कह रहे हो.........उठो..........भला मैं तुम्हारी शादी कैसे करवा सकता हूँ.........तुम्हें शादी करनी है.........तो करो.......तुम्हें रोक कौन रहा है ? "

इससे पहले कि जानी कुछ और बोलता मैं बीच में बोल पड़ा -

" अंकल........कुछ नहीं........ये बेचारा बहुत परेशान है.........असल में घर में अकेली बूढी माँ है..........जिसकी देखभाल के लिए इसके आलावा कोई और है नहीं........इसकी माँ हमेशा इसे शादी के लिए बोलती रहती है.......इसलिए ये कभी भी किसी के सामने ऐसे ही बैठ जाता है.......और यही कहता रहता है कि मेरी शादी करवा दो ! "

मैंने जानी का हाथ पकड़ा........और उसे घूरते हुए वापस कुर्सी पर बिठाया -

" बैठ जा हरमन.......बैठ जा.......सब ठीक हो जायेगा..........तुझे नौकरी मिल जाएगी तो तेरी शादी भी हो जाएगी.........थोडा सब्र कर......! "

मैं जानी के कान में धीरे से फुसफुसाया -

" अबे.........क्या कर रहा है.........मरवाएगा क्या ? "

मैंने नीतू के पापा से कहा -

" अंकल..........ये बेचारा बहुत परेशान है..........आप प्लीज भले ही मुझे नौकरी न दे..........पर इस बेचारे को ज़रूर नौकरी पर रख लीजियेगा ! "

नीतू के पापा भी शायद जानी के इस रिएक्शन से उबर नहीं पाए थे......वो बोले -

“ हाँ-हाँ क्यों नहीं..........मैं तुम दोनों को ही नौकरी पर रख लेता हूँ........तुम दोनों आज से ही ज्वाइन कर सकते हो ! “

मैंने कहा -

“ सर........पर आपने कोई इंटरव्यू तो लिया नहीं.........! “

नीतू के पापा ने कहा -

“ कोई बात नहीं...........तुम दोनों नीतू के दोस्त हो.........इतना काफी है मेरे लिए............तुम बाहर रिसेप्शन से अपना अपॉइंटमेंट लैटर ले लो..........बाकी काम तुम्हें नीतू समझा देगी ! “

हम दोनों ने मिस्टर चौधरी को थैंक्स कहा और बाहर आ गए ! बाहर आते ही मैंने जानी से कहा -

“ साले.........अंदर क्या कर रहा था..........तूने तो पहली बॉल पर ही बोल्ड करवा दिया था ! “

जानी बोला -

“ सॉरी यार........मैं एक दम घबरा गया था और मुझे लगा कि नीतू के पापा ने हमें पहचान लिया है ! “

मैंने कहा -

“ अपने उपर कंट्रोल कर..........अभी तो उसने नहीं पहचाना पर यही हरकतें करता रहा तो हम दोनों ज़रूर फसेंगे ! “

इतनी देर में नीतू भी वहाँ आ गयी........वो जानी से बोली -

" हेमांग..........तुम अंदर क्या कर रहे थे.........ऐसे तो तुम बहुत जल्द पहचान लिए जाओगे ! "

जानी बोला -

" सॉरी यार.........अब ऐसा बिलकुल भी नहीं होगा........आई प्रॉमिस ....! "

नीतू ने कहा -

" खैर..........ये लो तुम दोनों के अपॉइंटमेंट लैटर..........तुम दोनों को ही सुपरवाइजर की पोस्ट के लिए सेलेक्ट किया गया है........ कोई प्रॉब्लम तो नहीं है न ! "

मैंने कहा -

" नहीं...........सब बढ़िया है.........बस काम क्या करना है वो बता दो ! "

नीतू ने कहा -

" देखो.........हमारी यानी ' चौधरी ग्रुप्स ' की कई कंपनियां है........तुम्हे हमारी सॉफ्ट टॉयज बनाने वाली कंपनी के लिए सुपरवाइजर सेलेक्ट किया गया है ! "

मैंने कहा -

" ठीक है.........तुम हमें हमारा केबिन दिखा दो बाकी हम खुद सम्भाल लेंगे ! "

नीतू ने कहा -

" सुपरवाइजर का कोई केबिन नहीं है..........जहाँ टॉयज बन रहे है..........तुम्हे वहां घूम-घूम कर चेक करना है कि काम ठीक से हो रहा है या नहीं ! "

मैंने कहा -

" ठीक है...........फिर वो जगह दिखा तो जहाँ काम हो रहा है ! "

नीतू ने कहा -

" आओ मेरे साथ........! "

जानी धीरे से बोला -

" साले.........यहाँ पर सॉफ्ट टॉयज बनाने आये है क्या हम ? "

मैंने कहा -

" अरे यार..........चल तो सही........देखते है........फिर क्या कर सकते है हम ? "

जानी और मैं नीतू के पीछे-पीछे चल पड़े ! नीतू हमें उस जगह ले आई जहाँ टॉयज बनते थे..........वहां पर कई सारे वर्कर्स काम कर रहे थे.........नीतू ने बताया -

" यही वो जगह है..........जहाँ तुम्हे सुपरवाइज़ करना है ! "

मैंने कहा -

" ठीक है........बस आगे हम सम्भाल लेंगे ! "

जानी धीरे से बडबडाया -

“ साले...........बस क्या अब तो ट्रक भी तू ही सम्भालेगा ! “

मैंने जानी की तरफ घूर कर देखा !

नीतू ने चपरासी को आवाज़ दी -

“ मंगल.........यहाँ आओ ! ”

एक पचास साल की उम्र के आसपास का आदमी वहां आया -

“ जी मेमसाब.........! “

नीतू ने कहा -

“ मंगल...........ये हरमन सिंह और बलवंत सिंह है...........आज से ये दोनों यहाँ सुपरवाइजर का काम संभालेंगे.........तुम दोनों का ख्याल रखना ! “

मंगल ने कहा -

“ जी मेमसाब.......! “

इसके बाद नीतू हमारी तरफ मुड़ी और कहा -

“ किसी तरह की कोई ज़रुरत हो तो मंगल से बोल देना............अब मैं चलती हूँ........आल दी बेस्ट ! “

जानी बोला -

“ ठीक है.........लेकिन तुम आती जाती रहना..........दिल लगा रहेगा ! “

नीतू ने हँसते हुए कहा -

" ठीक है.......अब मैं चलती हूँ ! "

इसके बाद नीतू चली गयी !

मैंने मंगल से कहा -

" तुम अभी जाओ कुछ ज़रुरत होगी तो हम बुला लेंगे ! "

मंगल ने हाँ में सर हिलाया और चला गया ! अब वहां पर सिर्फ जानी और मैं रह गए थे !

मैंने जानी से कहा -

" यार.........एक बात बता......! "

जानी बोला -

" क्या.......? "

मैंने कहा -

" हम यहाँ छुट्टियाँ मनाने आये थे या यहाँ पर दूसरी जगह नौकरी करने ! "

जानी ने कहा -

" ये तेरा आईडिया था............मेरा नहीं कि हम यहाँ पर नौकरी करेंगे ! "

मैंने कहा -

" तो साले..........तेरे काम के लिए ही तो कर रहा हूँ सब कुछ ! "

जानी बोला -

" अच्छा-अच्छा ठीक है.........अब लड़ना बंद कर और ये बता कि आगे क्या करना है ? "

मैंने कहा -

" फिलहाल.........तो तू मंगल को बुला कर दो कुर्सियों का और दो चाय का इंतज़ाम कर ले.........फिर सोचते है.......क्या करना है ? "

जानी बोला -

" साले........तू नहीं सुधरेगा........! "

थोड़ी देर बाद..........हम दोनों अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठ हुए चाय की चुस्कियां ले रहे थे........मैं जानी से बोला -

" यार........समझ ही नहीं आ रहा.........कहाँ से शुरू करे.........ऐसे तो बैठे-बैठे कुछ पता नहीं लगेगा ! "

जानी बोला -

" चल..........सीधे हिटलर से ही पूछ लेते है........कि उसके दो नंबर के कौन-कौन से काम है ? "

मैंने कहा -

" यार........तुझमे सब्र बिलकुल भी नहीं है.......थोडा सब्र कर.......कोई न कोई रास्ता मिल ही जायेगा ! "

जानी ने हाँ में सर हिलाया और चाय पीने लगा............मैंने भी अपनी चाय खत्म की और जानी से बोला -

“ चल........ज़रा ऑफिस घूम के तो आयें.........देखतें है कि क्या-क्या काम होता है.........शायद कोई क्लू ही मिल जाए...........यहाँ बैठे-बैठे तो अपनी तशरीफ़ ही दुखेगी बस.......! “

जानी बोला -

“ हाँ चल.........बाहर सिगरेट भी पी लेंगे ! “

मैंने कहा -

“ पागल हो गया है क्या...........कभी सरदार को सिगरेट पीते देखा है क्या.........अब तू जानी नहीं........हरमन सिंह है..........कंट्रोल कर अपने आप पर ! “

मैंने जानी का हाथ पकड़ कर उसे खड़ा किया और बोला -

“ चल......राउंड मार के आते है ! “

जानी बोला -

“ चल........! “

जानी और मैं उस हॉल से निकल कर बहार रिसेप्शन की तरफ आ गए ! हमने देखा वहां रिसेप्शन पर ‘ चौधरी ग्रुप्स ‘ की सभी कंपनियों के बोर्ड लगे थे..........तक़रीबन पन्द्रह-सोलह कंपनियां होंगी ‘ चौधरी ग्रुप्स ‘ में !

मैंने कहा -

" तेरे ससुर का तो बड़ा तगड़ा काम है............साले अगर तेरी शादी नीतू से हो गयी तो एक कंपनी मेरे नाम भी करवा दियो ! "

जानी बोला -

" साले..........गाँव बसा नहीं.......भिखारी पहले ही आ गए ! अबे........शादी तो होने दे फिर एक क्या दो कंपनी ले लियो.........मेरे कौन से बाप की है ? "

हम दोनों के ही चेहरे पर कमीनी सी स्माइल आ गयी ! हम दोनों ऐसे ही इधर-उधर पूरे ऑफिस में फ़ालतू के चक्कर मारते रहे.........पर हमें ऐसा कुछ भी नहीं मिला जो हमारे काम आ सकता हो !

ऐसे ही धीरे-धीरे एक हफ्ता निकल गया........मैं और जानी रोज़ ऑफिस आते और कोशिश करते रहते कि हमारे हाथ कुछ लग जाए पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ !

ऐसे ही जानी और मैं ऑफिस में बैठे हुए थे............जानी मुझसे बोला -

" यार.......एक हफ्ता हो गया है..........अभी तक तो कुछ मिला नहीं..........तुझे क्या लगता है........कुछ मिलेगा भी या नहीं ? "

मैंने कहा -

" यार........पता नहीं.........कहीं ऐसा न हो हम ये सोचते रहे कि इस हिटलर का कोई दो नंबर का काम होगा पर असलियत में कुछ हो ही ना ! "

जानी बोला -

" साले.........तेरे चक्कर में मेरे तीस में से सात दिन तो इसी नौकरी में चले गए और तू अब कह रहा है कि कुछ हो ही ना ! "

मैंने कहा -

" हाँ..........तू तो एक महीने में बहुत बड़ी तोप चला लेता न ! "

इतने में मंगल हमारे पास आया और बोला -

" आप दोनों को साहब ने अपने केबिन में बुलाया है ! "

जानी और मैं एक दुसरे का मुहँ देखने लगे..........जानी बोला -

" अब इसे क्या काम पड़ गया हमसे ? "

मैंने कहा -

" मुझे क्या पता.......ससुरा तेरा है........मेरा नहीं.......चल वहीं चल कर पता चलेगा कि क्या काम है ? "

जानी और मैं मिस्टर चौधरी के केबिन की तरफ चल दिए.........हमने केबिन का दरवाज़ा खटखटाया........अंदर से मिस्टर चौधरी की आवाज़ आई -

" अंदर........आ जाओ.....! "

हमने केबिन का दरवाज़ा खोला और केबिन के अंदर चले गए ! हम अंदर आ कर शरीफों की तरह खड़े हो गए.........मिस्टर चौधरी ने हमें बैठने के लिए कहा तो हम चुपचाप शरीफों की तरह अपनी-अपनी कुर्सी पर बैठ गए !

मिस्टर चौधरी ने हमसे कहा -

" देखो..........तुम दोनों से एक जरूरी काम है...........वैसे तो मैं तुम्हे ये तकलीफ़ नहीं देता पर क्या करूं........तुम दोनों नीतू के दोस्त हो...........इसलिए तुम पर भरोसा कर सकता हूँ ! "

मैंने कहा -

" हाँ जी सर..........बिलकुल कर सकते हैं........आप कहिये क्या काम है ? "

मिस्टर चौधरी बोले -

" देखो.......हमारा सॉफ्ट टॉयज का बहुत बड़ा आर्डर है..........जो आज रात में ट्रक से जाना है..........मुझे किसी ज़रूरी काम से बाहर जाना है..........इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों ये आर्डर अपने सामने लोड करवा के भेजो ताकि...........मैं निश्चिंत रहूँ ! "

जानी बोला -

" सर.........आप चिंता मत कीजिये........सब हम पर छोड़ दीजिये.......हम सब संभाल लेंगे ! "

मैंने भी हाँ में सर हिलाया !

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" शाबाश..........मिस्टर हरमन..........मुझे आप दोनों से यही उम्मीद थी..........आप दोनों कंटेनर लोड करवाने के लिए रात को ग्यारह बजे ऑफिस में आ जाना ! "

मैंने कहा -

" जी सर..........हम पहुँच जायेंगे ! "

मैं खड़ा हुआ और जानी को इशारे से बाहर चलने के लिए कहा ! हम दोनों बाहर आ गए...........बाहर आ कर हम ऑफिस के कैन्टीन की तरफ चल दिए !

जानी और मैं कैंटीन में बैठ कर कॉफ़ी पी रहे थे..........जानी ने मेरी तरफ देखा और हलकी सी स्माइल के साथ बोला -

" क्या तू भी वही सोच रहा है...........जो मैं सोच रहा हूँ ! "

मेरे चेहरे पर भी हलकी सी स्माइल आ गयी.........मैंने कहा -

" हाँ यार........वैसे भी जब दो कमीने सोचते है.........तो एक जैसा ही सोचते है ! "

जानी बोला -

" मतलब.........तू भी एक कप कॉफ़ी और पीने की सोच रहा है ? "

मैंने कहा -

साले........तू कॉफ़ी में घुसा हुआ है..........मैं रात के बारे में सोच रहा हूँ ! "

जानी बोला -

" मजाक कर रहा था यार..........जानता हूँ........आज रात को हमारे पास मौका है.........जेम्स्बोंड बनने का.......और इस मौके को हम छोड़ेंगे नहीं ! "

मैंने कहा -

" हाँ बिल्कुल..........आज हमारे पास गोल्डन चांस है ! "

हम दोनों के चेहरे पर हल्की-हल्की स्माइल आ गयी ! बस अब हम दोनों को ही बेसब्री से रात का इंतज़ार था !

शाम के सात बजे थे........ऑफिस का सारा स्टाफ लगभग जा चुका था..........हम दोनों वहीं ऑफिस में बैठे हुए थे ! इतने में मिस्टर चौधरी वहां आये और बोले -

" अरे.........तुम दोनों अभी तक यहीं हो..........कंटेनर तो रात को जायेंगे...........तुम खाना वगेरह कहा कर आराम से आ जाना ! '

मैंने कहा -

" नहीं सर.......इट्स ओके.......हम डिनर यहीं मंगा लेंगे..........कोई प्रॉब्लम नहीं है ! "

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" तो ठीक है........अगर तुम लोग यहीं हो तो मैं मंगल को अपने साथ ले जा रहा हूँ.........कुछ काम है........नौ बजे तक मंगल और लोडिंग वाला स्टाफ आ जाएगा.........तब तक तुम लोग ऑफिस का भी ख्याल रखना ! "

हमारी तो जैसे लाटरी लग गयी थी...........जानी एक दम से बोला -

" जी सर.......बिलकुल ध्यान रखेंगे......आप चिंता मत करिए ! "

मिस्टर चौधरी ने हँसते हुए हाँ में सर हिलाया और मंगल को साथ ले कर बाहर निकल गए ! उनके जाते ही जानी और मैं उछल कर खड़े हो गए और आपस में गले लग गए !

मैंने कहा -

" चल भाई.........मिशन जेम्स्बोंड शरू करते है.........हमारे पास दो घंटे है.........हम सारा ऑफिस छान मारते है.........कहीं न कहीं कुछ तो मिलेगा ! "

जानी ने कहा -

" सही कह रहा है तू.........चल शुरुआत इस हिटलर के केबिन से करते है ! "

हम दोनों जल्दी-जल्दी मिस्टर चौधरी के केबिन में पहुंचे ! वहां पर कुछ अलमारियां थी.......मैंने जानी से कहा -

" तू उस अलमारी में देख.........मैं दूसरी अलमारी में देखता हूँ..........और ज़रा जल्दी-जल्दी चेक कर क्योकि हमें और जगह भी चेक करनी है ! "

जानी बोला -

" ठीक है .....! "

हमने जैसे ही अलमारी खोलने कि कोशिश की तो पता चला कि अलमारी में लॉक लगा हुआ था..........जानी बोला -

" अरे यार..........ये तो लॉक है ! "

मैंने कहा -

" अच्छा हुआ.......तूने बता दिया मैं तो सोच रहा था कि इसका हैंडल जाम हो गया है ! "

जानी बोला -

" मजाक मत कर.........चाबी ढूंढ इसकी ! "

मैंने कहा -

इसकी टेबल और दराज चेक करते है.........शायद वहां पर चाबी हो.........! "

मैंने टेबल की दराज खोली............उनमें कायम चूर्ण और ऐसी कुछ आयुर्वेदिक गोलियां रखी थी गैस की प्रॉब्लम के लिए !

मैंने कहा -

" लगता है.........तेरे ससुर जी...........जल्दी ही गैस प्लांट भी खोलने वाले है ! "

जानी हंसने लगा -

" साले तू नहीं सुधरेगा..........चाबी ढूंढ चाबी.....! "

मैंने दो तीन दराज़ देखे........आखिरी दराज़ में एक चाबी का गुच्छा मिला !

मैंने कहा -

" शायद यही होगा..........चल ट्राई करते है ! "

जानी ने मुझसे चाबी ली और अलमारियों में लगा लगा कर देखने लगा.........धीरे-धीरे हमने सभी अलमारियां खोने ली थी........हमने अलमारियों में रखी सारी फ़ाइलें और कागज़ देखने शुरू किये........लगभग आधे घंटे तक हम यही करते रहे पर हमें ऐसा कुछ भी नहीं मिला जो हम चाहते थे !

मैने कहा -

“ लगता है यार.........यहाँ कुछ भी नहीं मिलेगा........कहीं इसने घर पर न रखा हो सब कुछ ! “

जानी बोला -

“ नहीं यार.........घर पर नीतू भी तो होती है........यहीं ऑफिस में ही मिलेगा चल स्टोर रूम और बाकी जगह भी चेक करते है ! “

मैंने कहा -

“ चल........! “

हमने सारी अलमारियों में वापिस लॉक लगाया.......और चाबी वहीं रख दी जहाँ पहले रखी हुई थी !

हमने धीरे-धीरे बाकी जगह भी छान मारी पर हमें ऐसा कुछ भी नहीं मिला ! हम दोनों ने टाइम देखा तो नौ बजने में पांच मिनट थे !

जानी बोला -

“ चल यार.........बाहर ही चलते है.........नौ बजने वाले है.........बाकी लोग भी आने वाले होंगे ! “

मैंने कहा -

“ हाँ चल........बाहर चलते है........! “

मैं और जानी बाहर आ गए और वहां खड़े हो गए जहाँ टॉयज के बॉक्स पड़े हुए थे !

मैंने कहा -

" यार........कहीं भी कुछ नहीं मिला........कहीं गलती तो नहीं कर दी हमने !
"

जानी बोला -

" लगता तो ऐसा ही है यार...........हम क्या इसी काम के लिए रह गए है.......क्या अब ये सॉफ्ट टॉयज लोड करवाएंगे ! "

ये कह कर जानी ने जोर से एक लात एक बॉक्स पर मारी जिसमे टॉयज रखे थे........बॉक्स पूरी तरह हिल गया !

मैंने कहा -

" अब इस बेजुबान बॉक्स पर क्यों गुस्सा निकाल रहा है.........इससे क्या होगा ? "

इतने में वो बॉक्स धड़ाम से नीचे गिर गया...........और उसमे से टॉयज बाहर आ गए !

मैंने कहा -

" साले.........स्टाइल मत मार........इन टॉयज को वापस बॉक्स में डाल दे.........बाकी लोग भी आने वाले होंगे........फ़ालतू में हमारे उपर शक करेंगे !
"

जानी ने पता नही मेरी बात सुनी या नही सुनी..........वो बहुत अपसेट लग रहा था........उसने एक टेडी बेयर उठा लिया और उससे बोला -

" तू घूर क्या रहा है बे..........हमारा मजाक उड़ा रहा है.........तुझे क्या लगता है.......हम किसी काम के नहीं है ! "

मैंने कहा -

" क्या हुआ भाई..........सदमा लग गया क्या तुझे..........जो इस टेडी से बातें कर रहा है........चल बॉक्स बंद करवा अब जल्दी से ! "

जानी पर पता नहीं क्या भूत सवार था.........उसने टेडी को अपनी शर्ट में डाल लिया !

मैंने कहा -

" अबे.........ये क्या कर रहा है ? "

जानी बोला -

" मैं इसे छोड़ूंगा नही........इसे घर ले कर जाऊंगा...........वहां इससे हिसाब चुकता करूंगा ! "

मुझे लगा जानी को शायद कुछ ज्यादा ही सदमा लग गया है.........मैंने उसे कुछ और कहना मुनासिब नहीं समझा ! "

इतने में मंगल और बाकी स्टाफ भी आ गया........हमने वहां रखा सारा सामान लोड करवाया और बाहर आ गए ! सामान लोड करवाते-करवाते रात के एक बज गये थे !

मैंने जानी से कहा -

“ यार..........अब तो भूख भी लग रही है...........यहाँ रात को कोई होटल या ढाबा खुला होगा ! “

जानी बोला -

“ हाँ..........यहाँ हाईवे के पास एक ढाबा है........चल वहां चलते है........शायद कुछ मिल जाए ! “

हम दोनों ने बाइक उठाई और ढाबे की तरफ चल दिये !

ढाबे पर पहुंच कर हमने खाना आर्डर किया और टेबल पर बैठ कर खाने का वेट करने लगे ! मैं और जानी बैठे हुए थे........वेटर हमारे सामने टेबल पर खाना रख रहा था..........एक दम से मेरे दिमाग में आया कि जानी ने ऑफिस में से एक सॉफ्ट टॉय उठाया था !

मैंने जानी से कहा -

“ अरे यार........तूने वो टेडी क्यों उठाया था...........वो नीतू को गिफ्ट करेगा क्या........वो अपने ऑफिस का माल पहचान नही जायेगी ! “

जानी बोला -

“ नहीं यार.......मुझे कोई गिफ्ट वगेरह नहीं देना.......वैसे तूने अच्छा याद कराया उस टॉय के बारे में ! “

ये कह कर जानी ने उस टॉय को अपने शर्ट में से बाहर निकाल लिया और गौर से उसे देखने लगा !

मैंने कहा -

" उसे डराएगा क्या...........जो ऐसे देख रहा है..........हुआ क्या है तुझे ? "

जानी बोला -

" अरे नही यार.........कुछ नही बस ऐसे ही गुस्से में कुछ समझ नही आया तो इसे उठा लाया मैं.......मैंने सोचा था शायद कोई प्रूफ मिलेगा.......पर मिला नही और मिला तो साला ये टॉय ! "

जाने ने यह कह कर टॉय बाहर सड़क की तरफ फेंक दिया !

मैंने कहा -

" अबे.........इस पर क्यों नाराज़ हो रहा है........टेंशन न ले..........भगवान ने चाहा तो कुछ न कुछ सबूत मिल ही जाएगा ! "

जानी चुप रहा.........हम दोनों ने खाना शरू किया........खाना खाते हुए पूरा समय हम दोनों कुछ नही बोले......बस चुपचाप खाना खाते रहे ! खाना खाने के बाद हमने बिल दिया और अपनी बाइक की तरफ चल पड़े ! थोडा आगे जाने पर मैंने देखा कि जो टेडी जानी ने फेंका था वो फटी हुई हालत में सड़क पर पड़ा था...........शायद किसी गाडी के नीचे आ गया था !

मैंने कहा -

" वो देख..........तूने उस टेडी का क्या हाल कर दिया है............लगता है.......बेचारा किसी गाडी के नीचे आ गया है.........गर्दन ही अलग हो गई इसकी......! "

इतना कह कर मैं उस टेडी को उठाने के लिए चल पड़ा..........वहां जा कर मैंने देखा कि टेडी का जो हिस्सा फट गया था उसमे से कुछ पाउडर सा बाहर आ रहा था !

मैंने जानी से कहा -

" अबे.........इधर आ...........शायद कुछ काम की चीज़ मिली है ! "

जानी मेरे पास आया और बोला -

" अब इतनी रात को इस टाइम तुझे सड़क पर क्या काम की चीज़ मिल गयी ! ? "

मैंने जानी को टेडी दिखाया और कहा -

" देख यार.........ये पाउडर क्या है..........कहीं कुछ ब्राउन शुगर या चरस वरस तो नहीं है ? "

जानी बोला -

" हाँ.........मैं तो पक्का चरसी हूँ न........रोज़ नशा करता हूँ.........साले मुझे क्या पता कि ये क्या है ? "

मैंने कहा -

" फिर किससे पूछें कि ये क्या है ? "

जानी बोला -

" पुलिस में दे दे.........वो ही बता देंगे कि क्या है ? "

मैंने कहा -

" पागल हो गया है क्या.........पुलिस से इनाम नहीं लेना हमें..........उस हिटलर के खिलाफ सबूत लेने है ताकि उसे तेरी शादी के लिए ब्लैकमेल कर सकें ! "

जानी बोला -

" हाँ.........ये तो है ! "

मैंने कहा -

" तुझे पता है.........कोई ऐसी जगह जहाँ रात को नशा करने वाले पड़े रहते है ! "

जानी बोला -

" क्यों........इसे बेचेगा क्या ? "

मैंने कहा -

" अबे नहीं..........वहां जाकर किसी से पूछते है शायद कोई बता सके कि ये क्या चीज़ है ? "

जानी ने कहा -

" सही बोलता है..........चल पीछे बैठ फटाफट मैं एक ऐसी जगह जानता हूँ ! "

जानी और मैं बाइक पर बैठे और उस जगह की तरफ निकल पड़े..........तक़रीबन बीस मिनट बाद जानी ने एक फ्लाई ओवर के नीचे बाइक रोक दी ! उस फ्लाई ओवर के नीचे फुटपाथ पर कुछ नशेड़ी बैठे हुए थे !

मैंने कहा -

" अरे यार..........इनसे पूछेंगे कैसे...........ये तो साले नशे में धुत होंगे ! "

जानी बोला -

" ट्राई करते है.......! "

जानी एक नशेड़ी के पास गया..........वो अपने ख्यालों में खोया हुआ लग रहा था और चुपचाप बैठा हुआ एक तरफ देखे जा रहा था !

जानी ने उससे कहा -

" और भाई जी........क्या हाल है ? "

नशेड़ी ने जानी की तरफ गर्दन घुमा कर देखा और फिर दुबारा गर्दन घुमा कर वहीं देखने लगा !

मैंने कहा -

" यार.......ये तो ऐसे एक तरफ देख रहा है.......जैसे कोई मूवी देख रहा हो..........तो ऐसा कर इसके सामने वो पाउडर कर.........देख इसका क्या रिएक्शन होता है ? "

जानी ने उस नशेड़ी का हाथ पकड़ा और थोडा सा पाउडर उसके हाथ में रख दिया............ नशेड़ी ने जैसे ही वो पाउडर देखा उसकी आँखें पूरी तरह खुल गयी और उसने फटाफट वो सारा पाउडर चाट लिया !

वो नशेड़ी जानी से बोला -

" मुझे अपनी रानी से मिला दो.............मुझे अपनी रानी से मिला दो ! "

जानी बोला -

" अरे यार..........यहाँ कौन सी रानी है तेरी ? "

वो नशेड़ी बोला -

" वही........जो अभी तुमने मेरे हाथ पर रखी थी..........प्लीज़ मुझे और दो न ! "

मैंने कहा -

" इसे थोडा और दे दे.........! "

जानी ने उसे थोडा पाउडर और दिया..........उसने वो भी ऐसे ही चाट लिया !

जानी बोला -

" मैं तुम्हे और भी दे सकता हूँ...........वो भी फ्री में.......पर तुझे बताना होगा कि ये है क्या ? "

नशेड़ी बोला -

" पहले दो........फिर बताऊँगा ! "

जानी ने उसे थोडा और पाउडर दिया और बोला -

" अब बता.........ये क्या है ? "

नशेड़ी बोला -

" बताया तो.........ये मेरी रानी है ! "

नशेडी का जवाब सुनकर जानी को गुस्सा आ गया !

जानी बोला -

" तेरी रानी की तो..........! "

मैंने जानी को शांत रहने का इशारा किया और नशेड़ी से कहा -

" तुम्हारी रानी का कोई नाम भी तो होगा ! "

नशेड़ी बोला -

" हाँ..........है न ! "

मैंने जानी से कहा -

" देखा........ऐसे पूछते है..........प्यार से..........क्या नाम है तुम्हारी रानी का ? "

नशेड़ी बड़े प्यार से बोला -

" गुलाबो रानी......! "

उसका जवाब सुनते ही जानी हंसने लगा और बोला -

" देख........प्यार से पूछा है न तूने..........तो उसने भी प्यार वाला ही नाम बताया है ! "

यह कह कर जानी फिर से हंसने लगा और उसके साथ-साथ वो नशेड़ी भी हंसने लगा........नशेड़ी के हंसने के बाद तो मेरा पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया.........मुझे इतना गुस्सा आया कि मैंने पूरे जोर से एक झन्नाटेदार थप्पड़ उस नशेड़ी के कान के नीचे बजा दिया !

मैंने नशेड़ी से कहा -

" साले........इसका असली नाम बता.......! "

उस थप्पड़ के पड़ते ही नशेड़ी की आँखों में आंसू आ गए !

नशेड़ी बोला -

" क्या साहब........पहले तो मज़ा दिया फिर थप्पड़ मार कर सारा मज़ा उतार भी दिया ! "

मैंने कहा -

" जो पूछा है.........चुपचाप वो बता........इसका असली नाम क्या है ? "

नशेड़ी बोला -

" मारने की क्या ज़रूरत थी.........ऐसे ही पूछ लेते.........इसे ब्राउन शुगर कहते है ! "

नशेड़ी का जवाब सुनकर मेरी और जानी की आँखें एक दम खुली की खुली रह गयी........हमें विश्वास ही नही हो रहा था..........कि इतने दिनों से जिस सबूत को हम ढूंढ रहे थे.........वो हमें मिल चुका है !

मैंने और जानी ने एक दूसरे को देखा और खुशी से एक दूसरे के गले लगे गए.........उस टाइम हमें ऐसा फील हो रहा था जैसे कि हमने दुनिया जीत ली हो..........हमने उस नशेड़ी को थोडा सा पाउडर और दिया और वहां से निकल पड़े !

रात के तीन बज चुके थे..........जानी और मैं अभी भी जाग रहे थे.........हमारी आँखों से नींद जैसे गायब हो चुकी थी ! हमारे दिमाग में एक साथ कई ख्याल आ और जा रहे थे...........कई तरह के आइडियाज हमारे दिमाग में उछल कूद कर रहे थे.........अब ये बात और है कि इन सबमे से काम का कोई भी आईडिया नहीं था !

थोड़ी देर तक हम बैचेनी में इधर-उधर घूमते रहे.......फिर कुछ देर बात हम दोनों ही थक कर बैठ गए !

मैंने कहा -

" यार..........सबूत तो मिल गया.........पर आगे क्या करना है.........ये समझ नही आ रहा ! "

जानी बोला -

" हाँ यार.........मेरी भी समझ में नही आ रहा कि अब क्या करे ? "

थोड़ी देर हम सोचते रहे.........फिर जानी बोला -

" एक आईडिया आया है.........मेरे दिमाग में ! "

मैंने कहा -

" जल्दी बोल.......! "

जानी बोला -

" अब हमें सो जाना चाहिए............सुबह उठ कर फ्रेश माइंड से सोचेंगे कि क्या करना है ? "

मुझे भी जानी की बात सही लगी !

मैंने कहा -

" हाँ यार........मुझे भी यही सही लगता है.........चल सो जाते है ! "

इसके बाद हम लेट गए...........लेटे-लेटे भी दोनों के दिमाग में यही चलता रहा कि अब क्या करना चाहिए.......पर कुछ समझ नही आया ! थके होने की वजह से हम दोनों को ही पता नही चला कि हमें कब नींद आ गयी !

पता नहीं हम कितनी देर तक सोते रहे ! सुबह मेरी आँख खुली और मैंने फ़ोन में टाइम देखा तो दस बज चुके थे..........मैं एकदम से उठा और जानी को भी उठाया -

" अबे.........उठ जल्दी..........दस बज गए ऑफिस नहीं जाना आज क्या ? "

जानी बोला -

" सोने दे न यार..........इतनी देर से तो सोये थे रात को ! "

मैंने कहा -

" अबे........जल्दी उठ.........जिस काम के लिए ये नौकरी की थी.........वो काम करने का असली वक्त तो अब आया है ! "

जानी भी हडबडा कर उठ गया और बोला -

" हाँ यार.........ये तो तू सही कह रहा है..........चल जल्दी तैयार हो जा..........फिर ऑफ़िस चलते है ! "

हम दोनों फटाफट तैयार होकर बिना नाश्ता किये ही ऑफिस के लिए निकल पड़े !

रास्ते में जानी ने पूछा -

" यार.........हमें पता तो लग गया पर...........उस हिटलर को बतायेंगे कैसे कि हमें उसकी असलियत पता चल गई है ! "

मैंने कहा -

" हाँ मैं भी वही सोच रहा हूँ...........एक काम करते है.........हम उसे कुछ ऐसे हिंट देने की कोशिश करेंगे..........जिससे उसे लगे कि हमें उसकी असलियत पता है ! "

जानी ने कहा -

" हम क्या क्विज शो खेल रहे है.......जो उस क्लू देंगे ! "

मैंने कहा -

" यार..........सीधे सीधे बात करना ठीक नहीं लग रहा मुझे..........पहले उसे कुछ क्लू देते है..........देखते है कि उसका क्या रिएक्शन होता है..........उसी हिसाब से आगे बात करेंगे ! "

जानी बोला -

" ठीक है........! "

बातों-बातों में हम कब ऑफिस पहुंच गए पता ही नही चला...........ऑफिस पहुंच कर हम सीधे हिटलर के केबिन की तरफ चल पड़े !

जानी बोला -

" तुझे लगता है.........ना कि अपना काम बन जाएगा ! "

मैंने कहा -

" सब्र कर यार..........भगवान यहाँ तक लाया है..........तो आगे का रास्ता भी दिखा ही देगा ! "

हमने मिस्टर चौधरी के केबिन पर नॉक किया और अंदर आने के लिए पूछा -

" क्या हम अंदर आ सकते है ? "

मिस्टर चौधरी ने दरवाज़े की तरफ देखा और कहा -

" आओ.......अंदर आ जाओ ! "

हम दोनों अंदर आ गए..........मैं और जानी एक दूसरे को देख रहे थे और हमारे चेहरे पर हलकी सी स्माइल भी थी...........जैसे कि आज हम इस हिटलर को फंसा ही लेगे !

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" बैठो.........खड़े क्यों हो ? "

जानी बडबडाया -

" अब तो हमारे बैठने के ही दिन है..........खड़े तो अब आप रहोगे हमारे सामने ! "

मिस्टर चौधरी बोले -

" हरमन.........कुछ कहा तुमने ? "

जानी एकदम सकपकाया -

" नहीं सर.......! "

मैंने कहा -

" सॉरी सर........रात को ऑफिस में देर तक रुके थे.........इसलिए सुबह आने में लेट हो गया ! "

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" कोई बात नहीं..........इट्स ओके.........और बताओ कोई प्रॉब्लम तो नहीं हुई ना ! "

मैंने कहा -

" नहीं सर..........बल्कि हम तो आप से पूछने वाले थे कि...........सारा सामान ठीक से पहुंच गया था ना............कुछ कम तो नहीं रह गया था न ! "

ये कहकर मैंने जानी को आँख मारी..........जानी और मैं मिस्टर चौधरी के चेहरे के भाव पढने की कोशिश करने लगे...........पर मिस्टर चौधरी के चेहरे पर कोई भाव नहीं आया..........वो पहले की तरह शांत ही रहे और अपने फाइलों को देखते रहे !

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" क्यों..........तुमने कोई टॉय चुरा लिया क्या ? "

जानी एक दम से बोला -

" आपको कैसे पता चला ? "

मैंने कहा -

" हमारा मतलब...........हम टॉय चुरा कर क्या करेंगे ? "

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" अरे यार..........मजाक कर रहा हूँ..........तुम लोग तो सीरियस हो गये ! "

जानी बोला -

" कहीं कुछ सामान कम तो नहीं रह गया था.......! "

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" क्यों तुमने गिन कर सामान लोड नहीं करवाया था ! "

जानी बोला -

" नहीं.........मैं तो उस सामान कि बात कर रहा हूँ..........जो आप टॉयज के साथ एक्स्ट्रा भेजते है ! "

मैं जानी के मुहँ की तरफ देखने लगा........मुझे बिलकुल भी नही लगा था कि ये सीधा-सीधा पूछ लेगा !

मिस्टर चौधरी एकदम सीरियस से हो गए और बोले -

" इसका मतलब तुम्हें सब पता चल गया है ! "

मैं और जानी एक दम से खुश हो गए..........हमने सोचा कि अब तो हिटलर को फंसा लिया !

जानी बोला -

" हाँ............हमने सब देख लिया है..........और हम उसी एक्स्ट्रा सामान की बात कर रहें है.........कि वो कम तो नहीं रह गया ! "

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" मतलब.............एक पैकेट तुम्हारे पास है ! "

जानी अकड़ कर बोला -

" हाँ..........हमारे पास है...........पर वो हम आपको देंगे नहीं ! "

मिस्टर चौधरी एक दम हंसने लगे...........हमें लगा शायद सदमे की वजह से हंस कर अपनी झेंप मिटाने की कोशिश कर रहे है !

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" कोई बात नही.........तुम रखना चाहते हो तो रख लो..........मैं अपने क्लाइंट को दूसरा पैकेट भेज दूंगा.........बल्कि तुम लोग भी एक पैकेट और ले लो.........तुम दो लोग हो..........एक पैकेट से तुम्हारा क्या होगा ? "

अब मैं और जानी एक दूसरे की शक्ल देखने लगे !

मैंने कहा -

" आपने हमको क्या नशेड़ी समझ रखा है.........जो आप हमें एक पैकेट और देना चाहते है ! "

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" अरे..........इसमें नशेड़ी वाली क्या बात है...........मेरी तरफ से इनाम समझो ! "

जानी धीरे से बोला -

“ भाई लगता है.........बुड्ढे को कुछ ज्यादा ही सदमा लग गया है ! “

मैंने कहा -

“ हाँ भाई मुझे भी यही लगता है..........तभी ये ऐसी बहकी बहकी बातें कर रहा है ! “

जानी बोला -

“ हमें आपका वो एक पैकेट भी नहीं चाहिए..........आप वो भी ले लीजिये.........पर आपको हमारी एक बात माननी होगी ! “

मिस्टर चौधरी बोले -

“ अरे भाई............तुम्हें जो कहना है........वो वैसे ही कह दो...........इसके लिए वो सूट के कपडे का पैकेट वापस करने की क्या ज़रुरत है ? “

मैं और जानी एक दम से चिल्लाये -

“ क्या........? “

मैंने कहा -

“ आप सूट के पैकेट की बात कर रहे थे की ? “

मिस्टर चौधरी ने कहा -

“ और नहीं तो क्या..........मैं अपने हर क्लाइंट को चौधरी टेक्सटाइल्स की तरफ से हर आर्डर के साथ एक सूट का पैकेट गिफ्ट देता हूँ ! “

मेरा और जानी का मुहँ लटक गया........हम सोच रहे थे कि यार हम इतने पास पहुंच कर फिर से इतनी दूर आ गए !

मिस्टर चौधरी ने कहा

“ तुम्हें क्या लगा था..........? “

मैंने कहा -

नहीं सर.........कुछ नहीं ! “

जानी बोला -

“ अच्छा.........अब हम चलते है.........सर ! “

इसके बाद हम हिटलर के केबिन से बाहर आ गए ! जानी बिलकुल चुपचाप चल रहा था..........जैसे कि उसकी बहुत बड़ी ख़ुशी छिन गई हो............मैं और जानी अपने सॉफ्ट टॉयज वाले डिपार्टमेंट में आ गये थे..........जानी अभी भी चुप था..........मुझे लगा कहीं इसे कोई सदमा न लग जाए ये तो बिलकुल ही चुप हो गया, कुछ बोल ही नहीं रहा..........मैंने सोचा कि मुझे जानी से बात करनी चाहिए ताकि ये कुछ तो बोले..........ये सोच कर मैंने उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा -

“ जानी........! ”

जैसे ही मैंने जानी के कंधे पर हाथ रखा..........वो जोर-जोर से रोने लगा और रोते-रोते मेरे गले लग गया !

मैंने कहा -

“ अबे..........तुझे क्या हो गया है ? ”

जानी रोते-रोते बोला -

“ हाय.......मेरी नीतू.........अब मेरा क्या होगा..........मेरी नीतू मुझे नहीं मिलेगी...........मैं उसके बिना नहीं रह पाऊँगा ! “

मैंने कहा -

“ अबे..........यहाँ नौटंकी मत कर........चुप हो जा...........इतना क्यों मर रहा है........सब्र कर सब ठीक हो जाएगा ! “

इतने में मंगल वहां आ गया और जानी को रोते हुए देख कर बोला -

“ साहब..........ये हरमन साहब को क्या हुआ..........ऐसे दहाड़ें मार कर क्यों रो रहे है ? “

मैंने कहा -

“ अरे मंगल.........कुछ नहीं यार..........वो असल में आज इसका पेट ठीक से साफ नहीं हुआ न.........कब्ज़ की वजह से दर्द हो रहा है पेट में.........इसलिए दहाड़ें मार कर रो रहा है ! “

मंगल ने कहा -

“ बस इतनी सी बात सर जी..........मैं अभी जलजीरा लाता हूँ साहब के लिए.........फिर देखना कैसे पेट साफ़ होता है इनका ! “

इतना कह कर मंगल चला गया !

जानी मुझसे बोला -

" साले..........यहाँ मेरी ज़िन्दगी की लगी पड़ी है...........और तू कह रहा है कि मुझे कब्ज़ हो रही है ! "

मैंने कहा -

" अरे यार..........क्या करता........वो एक दम सामने आ गया..........तो जो समझ में आया वो बोल दिया........शुक्र मना ये नहीं बोला कि तुझे एड्स हो गया है ! "

जानी बोला -

" अरे यार..........अब क्या फर्क पड़ता है.........एड्स हो या कैंसर.........नीतू तो मुझे मिलेगी नहीं..........हमने सोचा था..........उस हिटलर को ब्लैकमेल करेंगे पर वो भी अब पॉसिबल नहीं लगता ! "

मैंने कहा -

" देख यार.........हो सकता है हिटलर को इस बारे में कुछ पता ही न हो..........ये काम कोई और कर रहा हो ! "

जानी बोला -

" तो किसी और को ब्लैकमेल थोडा ही करना है हमें ! "

मैंने कहा -

" अबे ध्यान से सुन..........देख हमें ये तो पता है कि दो नंबर का काम होता है..........अगर ये काम हिटलर नहीं कर रहा तो कोई दूसरा तो कर रहा होगा.........हम उस दूसरे का पता लगायेंगे ! "

जानी बोला -

" उससे क्या होगा ? "

मैंने कहा -

" हम उसका पता लगा कर हिटलर को बतायेंगे...........हो सकता है इससे खुश हो कर वो नीतू की शाद तुझसे करवा दे ! "

जानी एक दम उछल पड़ा -

" हाँ यार..........ये तो एकदम मस्त आईडिया है ! "

इतने में मंगल जलजीरा ले कर आ गया -

" लो सर जी.........ये जलजीरा पी लो.........आपकी कब्ज़ ठीक हो जाएगी ! "

जानी ने पूरा गिलास एक ही सांस में खतम कर दिया...........अब जानी थोडा रिलैक्स लग रहा था !

शाम के सात बज चुके थे..........मैं और जानी अभी भी ऑफिस में ही थे...........हम दोनों यही सोच रहे थे कि आखिर ये कैसे पता लगाये कि ये काम कौन कर रहा है ?

इतने में मंगल हमारे पास आया और बोला -

" सर जी........सात बज गए है..........आप लोगों को घर नहीं जाना क्या ? "

मैंने फ़ोन में टाइम देखा और जानी से कहा -

" अरे चल यार............सात कब बज गए पता ही नहीं चला ! "

जानी और मैं खड़े हो गए और बाहर की तरफ निकल गए !

जानी बोला -

" यार सोचते-सोचते इतना टाइम हो गया........पता ही नहीं चला........अब तो भूख भी लगने लगी है ! "

मैंने कहा -

" चल ऑफिस की कैंटीन में चलते है..........वहां कुछ खा लेंगे ! "

जानी और मैं ऑफिस की कैंटीन की तरफ चल पड़े...........कैंटीन पहुंच कर हमने दो चाय और समोसे का आर्डर दिया और खिड़की की पास वाली टेबल पर बैठ गए !

जानी बोला -

" यार........तुझे क्या लगता है......अगर ये काम हिटलर नहीं कर रहा तो कौन कर रहा होगा ! "

मैंने कहा -

" पता नहीं यार...........अभी तो कुछ कह नहीं सकता..........यहाँ पर इतने लोग काम करते है...........कोई भी हो सकता है ! "

थोड़ी देर में कैंटीन वाला लड़का हमारे टेबल पर चाय और समोसे रख गया !

मैंने कहा -

" चल..........चाय पी और समोसा खा..........फिर सोचते है कि क्या करना है ? "

हमने अपनी अपनी चाय उठाई और पीने लगे..........मैं खिड़की से बाहर देख रहा था..........मैंने देखा कि एक वैन मेन गेट से अंदर आई और उसमे से एक आदमी निकला...........उस आदमी ने एक बॉक्स वैन से बाहर निकाला...........वो बॉक्स बिलकुल वैसा बॉक्स था जिसमे हमने सॉफ्ट टॉयज पैक करवा कर भिजवाए थे !

मैंने जानी से कहा -

" अरे यार...........ये कब से बाहर से टॉयज मंगवाने लग गये...........सारे टॉयज तो यहीं बनते है ! "

जानी बोला -

" यार..........टॉयज नहीं खाली बॉक्स होंगे...........पैकिंग के लिए मंगवाए होंगे ! "

मैंने कहा -

" यार...........पैकिंग के लिए मंगवाए होते तो एक ही बॉक्स थोड़े ही आता..........कई सारे बॉक्स होते ! "

जानी बोला -

" चल देखते है..........वहां चल कर.......! "

मैंने कहा -

" चल..........! "

हम दोनों उठ कर जल्दी-जल्दी बाहर की तरफ चल पड़े........हम दोनों वैन के पास पहुंचे.........तो हमने देखा कि वैन से जो आदमी निकला था वो गार्ड से बहस कर रहा था !

मैंने कहा -

" अरे भाई.........क्या हुआ..........क्यों आपस में लड़ रहे हो ? "

गार्ड ने कहा -

" देखिये सर...........ये ज़बरदस्ती अंदर घुस आया है और अब ये कह रहा है कि ये बॉक्स ये ऑफिस के अंदर रख कर आयेगा !

मैंने कहा -

“ कोई बात नहीं............लड़ो मत..........इसे ये बॉक्स रखने दो.........हम देख लेंगे ! “

गार्ड ने कहा -

“ सर देख लीजिये.........मेरी नौकरी का सवाल है ! “

जानी बोला -

“ भाई..........तू टेंशन मत ले...........तेरी तो नौकरी का ही सवाल है.........मेरी तो शादी का सवाल है ! “

गार्ड जानी का चेहरा देखने लगा !

मैंने गार्ड से कहा -

“ अरे कुछ नहीं यार...........ये मजाक कर रहा है.........तू घबरा मत.........कुछ नहीं होगा ! “

गार्ड ने कहा -

“ ठीक है सर..........आप लोग कहते है तो मैं इसे ये बॉक्स रखने देता हूँ...........पर कोई प्रॉब्लम हुई तो आप लोग देख लेना ! “

मैंने कहा -

“ ठीक है........! “

हमने उस आदमी को बॉक्स उठा कर अपने पीछे आने को कहा..........वो आदमी बॉक्स उठा कर हमारे पीछे-पीछे चल पड़ा.........अंदर पहुंच कर हमने एक कोने में वो बॉक्स रखवा दिया !

मैंने उस आदमी से पूछा -

" ये बॉक्स किसने भिजवाया है ? "

उस आदमी ने कहा -

" मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता है............मुझे बस इस बॉक्स को हर हाल में ऑफिस के अंदर रखने को कहा गया था ! "

मैंने कहा -

" अच्छा ठीक है........तुम जा सकते हो ! "

उस आदमी ने हाँ में सर हिलाया और बाहर की तरफ निकल गया !

मैंने जानी से कहा -

" यार..........मुझे लगता है कि........हमें ये बॉक्स खोल कर देखना चाहिए ! "

जानी ने कहा -

" हाँ यार...........जल्दी कर.........मुझे भी देखना है कि आखिर इस बॉक्स में है क्या ? "

मैंने वो बॉक्स खोलना शुरू किया.........उस बॉक्स पर काफी सारी टेप्स लगाई हुई थी..........खैर कुछ देर बाद मैंने उस बॉक्स को खोल दिया !

उस बॉक्स को खोलने के बाद जानी बोला -

" अरे यार........इस बॉक्स में तो सिर्फ टॉयज है ! "

मैंने कहा -

" अच्छा हुआ.........तूने बता दिया वरना मुझे तो पता ही नहीं चलता कि इसमें टॉयज है ! "

जानी मुझे घूरते हुए बोला -

" अब इन टॉयज का क्या करे ? "

मैंने कहा -

" देख यार.........कुछ तो बात होगी..........जब सारे टॉयज यहीं बनते है तो ये बॉक्स बाहर से क्यों आया है.......कुछ तो पंगा होगा ही ! "

जानी बोला -

" एक काम करते है...........इसे खोल कर देखते है ! "

इतना कह कर जानी ने उसमे से एक टॉय उठा लिया..........जानी उस टॉय को गौर से देखता रहा और बोला -

" इन टॉयज में एक चीज़ अलग है..........जो यहाँ बनने वाले टॉयज में नहीं है ! "

मैंने कहा -

" क्या.......? "

जानी ने कहा -

" देख..........इन सब टॉयज की बेक साइड में 'एन.सी' लिखा है ! "

मैंने कहा -

" तो क्या..........इन सब पर 'एन.सी' लिखवाने के लिए इन्हें बाहर भेजा था और 'एन.सी' का मतलब क्या हुआ ? "

जानी ने कहा -

" इनको बाहर भेजा था..........या ये स्पेशली बाहर से मंगवाए है............ये तो पता नहीं पर 'एन.सी' का मतलब शायद मुझे पता है ! "

मैंने कहा -

" क्या मतलब है 'एन.सी' का ? "

जानी बोला -

"'एन.सी' मतलब..........निरंजन चौधरी ! "

मैंने कहा -

" अब ये निरंजन चौधरी कौन है ? "

जानी ने कहा -

" अबे..........भूल गया क्या.......नीतू के बाप का नाम निरंजन चौधरी ही तो है ! "

मेरे दिमाग में भी एकदम से ख्याल आया कि मैं उसे सिर्फ नीतू का बाप या हिटलर के नाम से ही बुलाता था.........असली नाम तो मैं उसका भूल ही गया था !

मैंने कहा -

" अब ज़रा इस खिलौने का पोस्टमार्टम भी करके देख.........कुछ मिलता है या नहीं ! "

मेरे कहते ही जानी ने उस खिलौने को पीछे की तरफ से पूरा उधेड़ दिया..........मैं और जानी एक दम से उछल पड़े.........हमने देखा कि उस खिलौने में ब्राउन शुगर भरी हुई थी !

मैंने कहा -

" अरे वाह यार........जो चाहिए था.......वो मिल गया ! "

जानी बोला -

" तूने कब से ब्राउन शुगर लेनी शुरू कर दी ! "

मैंने कहा -

" साले........मैंने लेनी शुरू नहीं की है.........मैं तो ये कह रहा हूँ कि अब तो सबूत भी मिल गया है कि यह काम कोई और नहीं वो हिटलर यानी 'एन.सी' ही करवा रहा है.........अब हम उसे ब्लैकमेल कर सकते है ! "

जानी बोला -

“ हाँ.........वो साला हिटलर........हमारे सामने ऐसे कर रहा था जैसे कि उसे कुछ पता ही ना हो.........चल उसे फ़ोन करते है ! “

मैंने कहा -

“ अभी रुक जा यार........पहल ये तो देख ले कि इस बॉक्स का वो करता क्या है..........हम उसे रंगे हाथ पकड़ेंगे ! “

जानी बोला -

“ भाई.........इसका सिर्फ नाम ब्राउन शुगर है..........ये कलर नहीं छोडती.........जो तू उसे रंगे हाथ पकड़ेगा ! “

मैंने कहा -

“ मजाक मत कर...........मेरा मतलब है.........उसे इस बॉक्स के साथ पकड़ेंगे..........चल अब इस बॉक्स को वापस पैक कर देते है...........ताकि किसी को पता न चले ! “

जानी ने कहा -

“ ठीक है.........! “

इसके बाद हमने उस बॉक्स को वैसे ही पैक कर दिया.........जैसे वो पहले पैक था !

अगले दिन हम सुबह ज़ल्दी ऑफिस पहुंच गए और सीधा वहां चले गए जहाँ टॉयज को बॉक्स में पैक किया जाता था..........वहां पर एक कोने में वो बॉक्स भी रखा था जो कल हमने चेक किया था..........हम दोनों जाकर अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठ गए तभी वहां मंगल आया और बोला -

" अरे सर जी............आप लोग आज इतनी जल्दी आ गए ! "

जानी बोला -

" हाँ.........वो आज मेरा हैप्पी बर्थडे है न...........इसलिए सुबह सुबह गुरूद्वारे गए थे..........वहां से फिर सीधा ऑफिस आ गए ! "

मंगल बोला -

" जन्मदिन मुबारक हो सर जी.......आज तो मैं आपके लिए स्पेशल बढ़िया वाली चाय लेकर आता हूँ ! "

यह कहकर मंगल चला गया !

मैंने कहा -

" अबे..........तेरा कौन सा हैप्पी वाला बर्थडे है..........आज ? "

जानी बोला -

" भाई.........आज सबूत मिल जायेगा और मैं मेरी नीतू से शादी कर पाऊँगा........मेरे लिए तो जैसे आज मेरा नया जन्म ही है.........तो हो गया न मेरा हैप्पी वाला बर्थडे ! "

मैंने कहा -

" तू नहीं सुधरेगा साले..........! "

जानी और मैं दोनों हंसने लेगे..........हँसते हँसते भी हमारी नजरें उस बॉक्स पर ही थी जहाँ से हमें आज सबूत मिलने वाला था ! थोड़ी देर बाद मंगल हमारे लिए चाय और स्नैक्स ले आया..........हम दोनों ने अपनी-अपनी चाय ली और स्नैक्स खाने लगे ! चाय ख़त्म होते-होते बाकी के लोग भी ऑफिस आना शुरू हो गए थे........हम दोनों तो बस इंतज़ार कर रहे थे कि कब वो हिटलर आये और उस बॉक्स का कुछ करे ताकि हमें सबूत मिल जाये........थोड़ी देर में निरंजन चौधरी यानी वो हिटलर ऑफिस में आ गया.....वो सीधा हमारी तरफ ही आ रहा था !

हमारे पास आ कर उसने कहा -

" गुड मोर्निंग बॉयज......! "

हमने भी कहा -

" गुड मोर्निंग सर.........! "

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" तुम दोनों को आज भी बॉक्स लोड करवाने होंगे.........कोई प्रॉब्लम तो नहीं हा न ? "

मैंने कहा -

" नही सर............बल्कि हमें तो ख़ुशी ही होगी ! "

जानी बोला -

" हाँ सर.........हम साबित जो कर देंगे ! "

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" क्या साबित कर दोगे ? "

मैंने कहा -

" इसका मतलब है सर........हम साबित कर देंगे कि हम कितनी मेहनत और लगन से काम करते है ! "

मिस्टर चौधरी ने कहा -

" शाबाश..........मुझे तुम दोनों से यही उम्मीद थी ! "

इतना कहकर वो अपने केबिन में चले गए !

मैंने जानी से कहा -

" अबे.........क्या कर रहा है...........थोडा कंट्रोल कर..........सबूत तो मिलने दे पूरा पहले ही क्यों उछल रहा है ? "

जानी बोला -

" क्या करूं यार.........अपनी नीतू को इतना पास पाकर कंट्रोल करना मुश्किल हो रहा है ! "

मैंने कहा -

" कंट्रोल कर..........वरना कोई गड़बड़ हो गयी तो हमारे सारी मेहनत बेकार हो जाएगी ! "

जानी ने कहा -

" ठीक है यार.........अब ध्यान रखूँगा ! "

हम अपनी सीट पर बैठ कर पैकिंग का काम देखने लगे..........खिलौनों को बॉक्स में पैक किया जा रहा था........सारा स्टाफ अपना काम कर रहा था..........पर उस अलग पड़े बॉक्स को कोई देख भी नहीं रहा था........सिवाय हमारे ! हम तीन चार घंटे ऐसे ही बैठ कर देखते रहे..........पर कुछ भी ऐसा नहीं हुआ जोकि हमारे काम का हो !

मैंने कहा -

" यार.........इतनी जल्दी तो उसे भी नहीं होगी.......जितनी जल्दी हमें है ! "

जानी ने कहा -

" किसे.......? "

मैंने कहा -

" जिसे इसे माल की डिलीवरी जानी है और उस हिटलर को जिसे ये डिलीवरी करवानी है ! "

जानी बोला -

" क्यों क्या हो गया ? "

मैंने कहा -

“ इतनी देर हो गयी......कोई इस बॉक्स को देख भी नही रहा और ना ही इसे कहीं ले कर जा रहे है ! “

जानी बोला -

“ हाँ यार............ये तो मैं भी सोच रहा हूँ कि कोई इस बॉक्स पर ध्यान क्यों नही दे रहा ? “

थोड़ी देर बाद लंच टाइम हो गया.........सारा स्टाफ लंच करने के लिए कैंटीन की तरफ जाने लगा........लेकिन हम वहीं बैठे रहे..........थोड़ी देर बाद वहां मंगल आया और उसने कहा -

“ सर जी........आप लोग लंच करने नहीं जाओगे ! “

जानी बोला -

“ नहीं........आज भूख..........!”

मैंने जानी की बात बीच में काटते हुए एक दम से बोला -

“ हाँ-हाँ क्यों नही जायेंगे..........आज तूने अपने बर्थडे पार्टी भी तो देनी है ! “

जानी मेरे चेहरे की तरफ देखने लगा..........मैंने जानी का हाथ पकड़ कर उसे खींचा और हम कैंटीन की तरफ जाने लगे !

जानी बोला -

" अबे.........क्या कर रहा है.........हम चले गए तो उस बॉक्स पर नज़र कैसे रखेंगे ? "

मैंने कहा -

" तूने शायद ध्यान नहीं दिया........हम इतने दिनों से यहाँ है.........पर मंगल ने आज तक हमने लंच के लिए नहीं पूछा ! "

जानी बोला -

" अरे.........उसे लगा होगा आज मेरा बर्थडे है.......इसीलिए पूछ लिया होगा.......इसमें शक करने वाली क्या बात है ? "

मैंने कहा -

" शक वाली बात है.........क्योंकि उसने ये नही पूछा कि वो हमारे लिए लंच में क्या लाएगा........उसने ये कहा कि आप लंच के लिए नहीं जाओगे........मतलब कि वो हमें बाहर भेजना चाहता था ! "

जानी ने कहा -

" इसका मतलब ये मंगल ही है............जो ये अमंगल काम कर रहा है ! "

मैंने कहा -

" शायद हाँ........चल छुप कर देखते है ! "

हम दोनों बाहर ना जा कर वाशरूम के अंदर चले गए !

जानी बोला -

“ अबे........यहाँ क्यों ले आया मुझे..........मुझे किसी चीज का प्रेशर नहीं है........ना ही नंबर एक का और ना ही नंबर दो का ! ”

मैंने कहा -

“ प्रेशर तो मुझे भी नहीं है..........तू चुपचाप दरवाज़ा लॉक कर ताकि कोई अंदर ना आ जाये ! “

जानी ने दरवाज़ा लॉक कर दिया !

मैंने कहा -

“ अब हम खिड़की से देखेंगे कि वो मंगल क्या कर रहा है..........क्योंकि वो हमारे सामने कुछ भी नहीं करेगा ! “

जानी बोला -

“ अच्छा ठीक है........चल फिर देखते है ! “

हमने किसी तरह दरवाज़े के हैंडल पर अपना पैर रखा और ऊपर हो कर खिड़की से अंदर हॉल की तरफ देखने लगे........हमने देखा वहां कोई भी नहीं था !

जानी बोला -

“ अबे...........यहाँ तो कोई भी नहीं है..........फ़ालतू में टंगवा दिया तूने ! “

मैंने कहा -

“ सब्र कर और चुपचाप देख ! “

तभी वहां मंगल आया और उस बॉक्स के पास कर खड़ा हो गया..........उसने इधर उधर चारों तरफ देखा........जब उसे यकीन हो गया कि आस पास कोई नहीं है..........तब उसने जल्दी-जल्दी बॉक्स को खोलना शुरू कर दिया !

जानी बोला -

" अच्छा........तो साला यही है........जो असली चोर है.......इसे तो मैं छोड़ूंगा नहीं ! "

मंगल ने उस बॉक्स में से टॉयज निकाल कर दो-दो टॉयज बाकी के बॉक्स में रखने शुरू कर दिए...........बाकी टॉयज और इन टॉयज और इन टॉयज की पैकिंग में सिर्फ 'एन.सी' के निशान का फर्क था !

मैंने जानी से कहा -

" चल..........ज़ल्दी चल.........इस मंगल को पकड़ते है ! "

जानी बोला -

" पर.........वो हिटलर तो आया नहीं ! "

मैंने कहा -

" हो सकता है........उसने ही इसे भेजा हो ताकि उसको कोई देख न पाए ! "

हम दोनों फटाफट दरवाज़े से नीचे उतरे और अंदर हॉल की तरफ भागे...........हम दोनों सीधा मंगल के पास पहुंच गए..........वो अभी भी टॉयज को अलग-अलग बॉक्स में रखने में लगा हुआ था !

जानी बोला -

" अरे मंगल.........ठीक से रख इस बॉक्स में तो तूने माल रखा ही नहीं ! "

मंगल अपनी धुन में बोला -

" कौन से बॉक्स में.......? "

इतना कह कर मंगल अचानक से हमारी तरफ मुड़ा........हमें देख कर उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी थी..........उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थी !

मैंने कहा -

" तो..........आखिर हमने तुम्हें पकड़ ही लिया ! "

मंगल को कुछ देर तक तो समझ ही नहीं आया कि वो क्या करे..........फिर अचानक से वो हाथ जोड़ कर हमारे पैरों में गिर पड़ा और रोते हुए बोला -

" सर जी..........इसमें मेरी कोई गलती नहीं है..........ये सब तो मैं मालिक के कहने पर करता हूँ ! "

जानी बोला -

" मालिक के कहने पर करता है या नहीं वो बाद की बात है...........पर करता तो तू ही है न ! "

मंगल के चेहरे पर खौफ साफ़ नज़र आ रहा था..........हमें लगा यही मौका है इसे और डरा कर इसके मालिक तक पहुंचा जाए और सबूत हासिल किये जाए !

मैंने कहा -

" यार..........जरा पुलिस को तो बुला.........वो अपने मालिक के इस वफादार नौकर को अच्छा खासा इनाम देगी ! "

मंगल जोर-जोर से दहाड़ें मार कर रोने लगा -

" नही सर जी नहीं........पुलिस को मत बुलाना........आप जो कहोगे मैं वो ही करूँगा ! "

मैंने कहा -

" ठीक है............आज रात को जब माल लोड होगा तो तू अपने मालिक को यहाँ बुलाएगा........हमें तेरे मालिक से कुछ ज़रूरी बात करनी है ! "

जानी बोला -

" अगर तूने कोई होशियारी दिखाई.............तो समझ ले पुलिस तुझे तेरी वफादारी का इनाम देने कभी भी पहुंच जायेगी ! "

मंगल ने कहा -

" सर जी.........आप लोग जो कहोगे...........मैं वही करूंगा..........पर मुझे पुलिस के हवाले मत करना ! "

मैंने कहा -

" ठीक है.........अब तू जा.........! "

मंगल फटाफट बिना देर किये वहां से निकल गया............उसके जाने के बाद मैंने और जानी ने हाथ मिलाया और........आपस में गले मिल गए !

मैंने कहा -

" मुबारक हो...........हमारी मेहनत रंग लायी ! "

जानी बोला -

" हाँ यार.........अब मेरी नीतू मुझे मिल जाएगी............मुझे तो अभी भी यकीन नहीं हो रहा ! "

मैंने कहा -

" हो जाएगा यार.............अब तो बस रात का इंतज़ार है ! "

जानी ने हाँ में सर हिलाया ! हम दोनों अपनी-अपनी कुर्सियों पर आ कर बैठ गए और बेसब्री से रात का इंतज़ार करने लगे !

रात के आठ बज गए थे..........सारा स्टाफ जा चुका था..........हम दोनों अपनी-अपनी कुर्सिओं पर बैठे थे..........मंगल हमारे सामने हाथ बांधे चोरों की तरह खड़ा था !

मैंने कहा -

" तूने अपने मालिक को बुलाया है या नहीं ! "

मंगल ने कहा -

" सरजी..........बुलाता कैसे नहीं............मरना थोड़े ही है ! "

जानी बोला -

" पर.........अभी तक तेरा मालिक आया तो नहीं ! "

मंगल ने कहा -

" बस सर जी..........आने वाले होंगे किसी भी समय ! "

इतने में बाहर से दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई..........हम दोनों ने फटाफट से लाइट ऑफ कर दी और मंगल से कहा -

" चुपचाप अपने मालिक को यहाँ ले कर आ और हमारे बारे में बिलकुल भी पता नहीं लगना चाहिए ! "

मंगल ने हाँ में सर हिलाया और अपने मालिक को लेने बाहर की तरफ निकल गया ! हम चुपचाप बैठ कर वहाँ दोनों का इंतज़ार करने लगे.........थोड़ी देर बाद मंगल अपने मालिक को वहां ले कर

आया.........अँधेरा होने की वजह से उसकी शकल साफ़ नहीं दिख रही थी...........वो एक काले साए की तरह लग रहा था...........वो दोनों अंदर आ गए ! जानी और मुझे दोनों को अपने दिल की धडकने जोर-जोर से सुनाई दे रही थी !

मंगल ने कहा -

" मालिक.........आप बैठो में लाइट जलाता हूँ ! "

वो साया कुर्सी पर बैठ गया..........मंगल ने लाइट जलाई ! हमारी नज़र उस साए पर पड़ी.........उस साए ने काले कपडे पहन रखे थे...........जिस वजह से वो अँधेरे में और भी काला लग रहा था !

मंगल ने साए से कहा -

" मालिक मुझे माफ़ कर दो...........मेरे पास और कोई रास्ता नहीं था........पर ये दोनों आपसे मिलना चाहते थे ! "

यह कर कर मंगल ने हमारी तरफ इशारा किया.........शायद उसके मालिक को इस बात का अहसास नहीं था कि उन दोनों के अलावा भी कोई और वहां मौजूद है............जैसे ही उस साए ने हमारी तरफ पलट कर देखा..........हमारी तो जैसे जान ही निकल गयी..........ऐसे लगा जैसे पैरों के नीचे से ज़मीन क्या सब कुछ ही खिसक गया हो...........हम दोनों को ही हार्ट अटैक आते-आते बचा ! हमने अपनी-अपनी नकली दाढ़ी और मूंछ नोच ली............हमें तो समझ ही नहीं आ रहा था कि हम क्या करें !

बड़ी मुश्किल से हम दोनों कि मुहँ से निकला -

" नीतू तुम.......! "

नीतू भी हमें देख कर हैरान थी...........हम तीनों को ही कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या बोले ! जानी को तो जैसे बहुत गहरा सदमा लगा था !

मैं बड़ी मुश्किल से बोला -

" मतलब..........'एन.सी' का मतलब निरंजन चौधरी नहीं नीतू चौधरी है ! "

नीतू ने कहा -

" हाँ.........! "

जानी बोला -

" मतलब..........तुम भी अपने पापा के साथ दो नम्बर का काम करती हो ? "

नीतू ने कहा -

" नहीं...........पापा को तो इस बारे में कुछ भी नहीं पता...........ये काम मैं अकेली ही करती हूँ ! "

ये सुनकर तो हम गिरते-गिरते बचे...........हम दोनों ही धम्म से अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठ गए........मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा था !

जानी ने कहा -

" तुम्हे..........ये सब करने की क्या ज़रूरत थी ? "

नीतू ने कहा -

" जरूरत न होती..........तो मैं ये काम कभी नहीं करती ! "

मैंने कहा -

" पर..........ऐसा क्या हो गया था ? "

नीतू ने कहा -

" मैं जब लन्दन से एम्.बी.ए. की डिग्री ले कर आई तो मेरे पापा ने मुझे बिज़नस सँभालने को कहा........जब मैंने बिज़नस संभालना शुरू किया तो मुझे पता लगा कि हमारे कंपनी पर कितना कर्ज़ चढ़ा हुआ है और इस क़र्ज़ को उतारने के चक्कर में मैं इन कामों में फंसती चली गयी ! "

जानी बोला -

" तो फिर.........क़र्ज़ उतरा या नहीं ! "

मैंने जानी को घूरा -

" अबे........ये क्या सवाल पूछ रहा है ? "

नीतू ने कहा -

" क़र्ज़ तो कब का उतर चुका है ! "

मैंने कहा -

" तो तुम इस काम को छोड़ क्यों नहीं देती..........अब तो कोई ऐसी मजबूरी नहीं है ! "

नीतू ने कहा -

" नहीं.........ये पॉसिबल नहीं है...........इस काम में आना आसान है.........पर इससे निकलना बहुत मुश्किल है ! "

मैंने कहा -

" पर...........तुम्हारे पापा को पता चलेगा तो ! "

नीतू ने कहा -

" नही.........प्लीज उन्हें मत बताना..........वो तो यही समझते है कि मैंने अपने बिज़नस को अच्छे से संभाल लिया है..........और उसी से सारे क़र्ज़ उतारे है ! "

मैं और जानी एक दूसरे का मुहँ देख रहे थे.........हमें अब भी यकीन नहीं हो रहा थे कि इन सबके पीछे नीतू है !

मैंने हिम्मत करके कहा -

" देखो.........इस काम से निकलना मुश्किल ज़रूर है............पर नामुमकिन नहीं है.........तुम कोशिश तो करो ! "

नीतू ने कहा -

" नही.........ये बहुत मुश्किल होगा ! "

मैंने कहा -

" मुश्किल ही होगा ना..........नामुमकिन तो नहीं...........और फिर जानी और उसका प्यार भी तो तुम्हारे साथ है ! "

जानी एकदम से बोला -

" नहीं..........! "

मैंने हैरानी से जानी की तरफ देखा -

" क्या मतलब नहीं..........? "

जानी ने कहा -

" मैं नीतू से शादी नहीं कर सकता ! "

मेरा तो जैसे सर ही घूम गया.........मेरा खून खौलने लगा !

मैंने कहा -

" साले..........जिस काम के लिए इतनी मेहनत की...........इतनी मरवाई.........अब वो पूरा हो रहा है.........तो तू मना कर रहा है ! "

जानी ने कहा -

" हाँ यार...........मैं मना कर रहा हूँ...........क्योंकि मैं नहीं चाहता कि हमारी शादी के बाद जब हमारे बच्चे बड़े हो और अपनी माँ के बारे में कुछ पूछें...........तो मैं उन्हें जवाब न दे पाऊँ..........मैं उन्हें क्या कहूँगा कि..........बेटा तुम्हारी माँ चोर है..........स्मगलर है ! "

मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा था कि जानी की इस बात पर मैं रोऊँ या हसूं ! जिस लड़की के लिए जानी इतना पागल था..........अब वही जब उसे मिलने वाली है...........तो वो खुद ही मना कर रहा है.........जिस काम के लिए हमने इतनी मेहनत की..........इतनी मराई..........वो सब अब बेकार सी लग रही थी ! इसीलिए मैंने शुरू में ही कहा था -

' दोस्ती की है........तो मरानी तो पड़ेगी ! '

काफी देर तक तो मैं कभी नीतू को और कभी जानी को देखता रहा..........वो दोनों बिलकुल चुपचाप थे..........और मुझे तो वैसे ही समझ में नहीं आ रहा था कि..........मैं करूं तो क्या करूं.......मैं चुपचाप कुर्सी पर बैठ गया........मेरे सामने अब तक जो भी हुआ वो सब किसी फिल्म की तरह घूम रहा था........और मुझे वो फिल्म एक ऐसी फिल्म लग रही थी.....जिसका की कोई दी एन्ड नही है !

खैर.........हम दोनों चुपचाप नीतू को उसके हाल पर छोड़ कर बाहर आ गए..........मेरा तो दिमाग अभी भी पूरी तरह घूम रहा था !

हम दोनों ऑफिस से बाहर आ गए थे.........और चुपचाप चले जा रहे थे........मेरा तो दिमाग बुरी तरह से फटा जा रहा था !

मैंने जानी से कहा -

" चल यार...........सिगरेट पीते है ! "

जानी ने कहा -

" अबे..........तू कब से पीने लग गया ? "

मैंने कहा -

" साले.........तेरी वजह से पिछले कुछ दिनों मे ही लाइफ में इतना कुछ हो गया कि.........समझ ही नहीं आ रहा क्या करूं..........क्या नहीं ? "

जानी कुछ नहीं बोला............हम दोनों सिगरेट की दुकान पर पहुंच गए..........जानी ने सिगरेट जलाई.......वो पीने ही लगा था कि मैंने उसके मुहँ से छीन कर सिगरेट पीना शुरू कर दिया !

जानी बोला -

" भाई..........आराम से पी ले.........जल्दी क्या है ? "

मैंने कहा -

" साले...........तू तो कुछ बोल ही मत ! "

हम दोनों ऐसे ही दस-पंद्रह मिनट तक चुपचाप सिगरेट पीते रहे !

कुछ देर बाद जानी बोला -

" यार..........तू मेरा सच्चा दोस्त है ना ? "

मैंने कहा -

" साले.........इतना कुछ होने पर भी तू मुझसे ये पूछ रहा है ? "

जानी बोला -

" यार ऐसी बात नहीं है.........वो तो मुझे मालुम है कि तू मेरा सच्चा दोस्त है.........वो........बस एक बात करनी थी तुझसे ! "

मैंने कहा -

" क्या..........? "

जानी बोला -

" वो.......वैसे तो गीतू भी अच्छी लड़की है...........और मुझे न उससे भी थोडा-थोडा प्यार सा है.........और तो और मैं उसके साथ शादी भी कर सकता हूँ...........पर मुझे तेरी मदद चाहिए ! "

मैं जानी को घूरता रहा !

जानी बोला -

" वो.........क्या है न.........गीतू के बाप की नजरों में भी मेरी इमेज कुछ अच्छी नहीं है.............तो तुझे ही मेरी मदद करनी पड़ेगी ! "

मेरा पारा अब सातवें आसमान पर था !

मैंने कहा -

" साले...........अब तो मेरी नजरों में भी तेरी इमेज बहुत ज्यादा अच्छी नहीं है ! "

इतना कह कर मैं ईंट उठा कर उसकी तरफ उसे मारने के लिए भागा............जानी आगे-आगे चिल्लाते हुए भाग रहा था -

" अरे यार..........सुन तो सही........रुक तो सही......! "

और मैं उसके पीछे-पीछे चिल्लाते हुए भाग रहा था -

" रुक जा.........साले मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं........रुक जा ! "